❖ वर्ष 50 ❖ अंक 10 ❖ अक्टूबर 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 50 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2023 ● पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
12. चित्रकथा
22. अनमोल वचन
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

नये सबस्क्रिप्शन सोफ्टवेयर के सन्दर्भ में
पाठकों से निवेदन

सभी भाषाओं की निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं 'सन्त निरंकारी', 'एक नजर' एवं 'हँसती दुनिया' के पाठकों के लिए नये सबस्क्रिप्शन सोफ्टवेयर में सदस्यों की व्यक्तिगत जानकारी अपडेट की जा रही है। नये सोफ्टवेयर के सेवा में उपलब्ध होने तक नई सदस्यता स्थगित कर दी गई है। नये सबस्क्रिप्शन सोफ्टवेयर में सदस्यता की सही जानकारी के लिए एक सदस्यता अपडेशन फॉर्म बनाया गया है।

अतः जिन पाठकों को पत्र–पत्रिकाएँ व्यक्तिगत तौर पर भेजी जा रही हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी updation form के अनुसार नजदीकी ब्राँच को आवश्यक रूप से देने की कृपा करें। यह updation form आप E-mail: patrika.help@nirankari.org से मँगवा सकते हैं। कृपया अपना मोबाइल/व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें।

–प्रभारी, पत्रिका–प्रकाशन विभाग

हँसती दुनिया

कहानियां

6. नदी का घमण्ड
– राजकुमार जैन 'राजन'

10. किताब के पन्ने
– विपिन कुमार

18. अनूठा न्याय
– मीना

25. दोषी कौन?
– डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य

32. चौथे सेवक की बुद्धिमानी
– अशोक जैन

40. मैं बेईमान नहीं
– परिधि जैन

विशेष/लेख

8. सच्ची राष्ट्रसेवा
– राजेन्द्र थोरात

16. लेसर किरणें
– कैलाश जैन

20. कीवी
– जयेन्द्र

24. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल

28. चाकू मछली
– परशुराम शुक्ल

30. जहाँ वर्ष में दो बार रावण का दहन होता है
– कमल सोगानी

42. शुतुरमुर्ग
– विद्या प्रकाश

46. खूबसूरत घोसला
– कमल जैन

कविताएं

9. प्रार्थना
– संजय कुमार चतुर्वेदी

9. जागो हुआ सवेरा
– दीपक कुमार 'दीप'

19. करना अच्छे काम
–शोभा शर्मा

19. अनुशासन
– हरप्रसाद रोशन

23. धरती का शृंगार हैं पेड़
– डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

23. नन्हा पौधा
– गोविन्द भारद्वाज

31. तारे, बूँद ओस की
– सुकीर्ति भटनागर

39. ऐसा काम न करना
– राजकुमार जैन

47. चिड़िया
– कीर्ति श्रीवास्तव

47. नन्हीं चिड़िया
– राजेन्द्र निशेश

सबसे पहले

आलस्य
मन की एक अवस्था

रोहित बहुत ही आलसी और लापरवाह था। उसे हर काम को टालने की आदत–सी बन गई थी। उसके माता–पिता, मित्र, सहपाठी और उसके शिक्षक भी उसकी इस आदत से परेशान थे क्योंकि अगर वह कोई काम करता था तो आधे–अधूरे मन से करता था। रोहित स्वयं भी इस आदत से परेशान था। एक दिन अध्यापक जी का दिया कार्य उसने आलस्यवश और आगे से उसे कोई काम न कहें इसलिए उसने उस काम में अध्यापक की ही गलती निकालने का प्रयास करने लगा। उस दिन अध्यापक ने सभी विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा– आज मैं आप सभी को आलस्य के कारण एवं उसका निदान बताऊँगा।

बच्चो, आलस्य नाम की कोई वस्तु नहीं है यह तो केवल हमारे मन की अवस्था का नाम है। इसको हम स्वयं ही उत्पन्न करते हैं और इस संरचना को हम स्वयं सुधार भी सकते हैं।

आलस का मुख्य कारण है हमारे भोजन में गरिष्ठ एवं अपाच्य पदार्थों की अधिकता। इस प्रकार का भोजन हमारे शरीर पर नकारात्मक असर छोड़ता है। यह हमारी स्फूर्ती, सतर्कता और ताजगी को भी क्षीण कर देता है। इसलिए हमें हमेशा स्वच्छ, पौष्टिक, घर में बना हुआ ताज़ा एवं सुपाच्य भोजन ही करना चाहिए। अब अचानक ही अध्यापक ने बड़े ही ऊँचे स्वर में कहा– बच्चो, सावधान! सभी बच्चे एकदम कमर सीधी करके बैठ गए और आगे सुनने को आतुर हो गए तभी अध्यापक ने कहा कि जैसे आपने मेरी ऊँची आवाज सुनकर कमर सीधी करके स्थिर बैठ गए। यह दूसरा कारण है जिसे हम समझ नहीं पाते कि हमेशा हमारी कमर, रीढ़ सीधी और स्थिर होनी चाहिए। इससे कभी आलस्य नहीं आएगा। किसी भी कार्य को करें तो हमेशा हमें जागरूक होकर ही करना है और अनावश्यक चीज़ों को ओर ध्यान नहीं ले जाना।

अपर्याप्त नींद भी आलस्य का एक कारण बन जाती है क्योंकि कम नींद लेंगे तो दिनभर सुस्ती छाई रहेगी। सक्रियता भी नहीं रहेगी। अगर अधिक नींद करते रहेंगे तो अनेकों कार्य अधूरे ही रह जाएँगे। अतः अनुशासन के साथ, रात्रि को निश्चित समय पर सोना और निश्चित समय पर उठना तथा कुछ व्यायाम करना भी शरीर को चुस्त कर देता है।

प्यारे बच्चो एवं साथियों! हमें स्वयं ही जागरूक एवं सजग होकर अपने मन को दिशा देनी होगी। जो काम अभी हो सकता है उसे कल पर न छोड़ें। अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास रखें कि मैं अमुक कार्य अगर कहीं पहले नहीं कर पाया था तो अब अवश्य कर लूँगा। इस भाव से हम हमेशा आगे बढ़ सकते हैं। इसके साथ–साथ हमारा लक्ष्य भी निश्चित होना चाहिए। हमें हमेशा निम्न विचारधारा वालों से भी दूरी बनाकर रखनी चाहिए क्योंकि वे हमारी ऊर्जा का अपव्यय ही करेंगे। इन सबके साथ–साथ हमें अपने खान–पान, बोलचाल, व्यवहार और निश्चित लक्ष्य की ओर भी ध्यान देना है। इस तरह हम एक सुन्दर, स्वस्थ वातावरण में जागरूक होकर अपने हर कार्य में निपुणता हासिल कर सकते हैं।

एक स्वस्थ मनुष्य ही एक अच्छा नागरिक बनकर मानवता को देन देने का कारण भी बन सकता है। महात्मा गाँधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी भी इसका जीवन्त उदाहरण हैं जिन्होंने आलस्य को कभी पास नहीं आने दिया और देश की सेवा की। हमेशा मानव को मानव समझा।

सारी दुनिया को मानवता का सन्देश देने हेतु सन्त निरंकारी मिशन का वार्षिक सन्त समागम 28, 29 और 30 अक्टूबर को सत्गुरु की छत्रछाया में सम्पन्न होने जा रहा है। आप सभी इस महायज्ञ में आमंत्रित हैं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 282

मेहर गुरु दी गुरसिखां दे विगड़े कम बणान्दी ए।
मेहर गुरु दी गुरसिखां दे सारे भरम मिटांदी ए।
मेहर गुरु दी कर देन्दी ए गुरसिखां नूं सदा निहाल।
मेहर गुरु दी कर देन्दी ए गुरसिखां नूं मालोमाल।
मेहर गुरु दी गुरसिखां नूं भय तों निर्भय करदी ए।
मेहर गुरु दी गुरसिखां दे सारे ही दुख हरदी ए।
मेहर गुरु दी गुरसिखां दी रसना ते बह जांदी ए।
गुण अपणे खुद गायन करदी तूंही तूंही अखवांदी ए।
मेहर गुरु दी जिसते होवे ओह जन भागां वाला ए।
मेहर गुरु दी जिसते होवे ओह अवतार निराला ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्गुरु की मेहर गुरसिखों के बिगड़े काम बनाती है। इसका सबसे बड़ा काम है मानव तन में आकर परमात्मा को जानना और मानव बनना। इसकी भक्ति करते हुए सहज जीवन जीना। सत्गुरु की कृपा मानव को सही मायने में मानव बनाती है। इन्सान तमाम तरह के वहमो–भ्रमों में घिरा रहता है। भ्रम में पड़ा इन्सान सामने होता कुछ है और उसे समझता कुछ है। ये झूठ को सच मान बैठता है और सच्चे मन से सत्य की तलाश नहीं करता। सत्गुरु की कृपा इसके भ्रमों को मिटाकर इसे सच्चाई का ज्ञान कराती है।

सत्गुरु की मेहर से गुरसिख सदा प्रसन्न रहता है। उसके मन की उदासी समाप्त हो जाती है। गुरु की कृपा पाकर वह निहाल हो जाता है और उसकी यही अवस्था हमेशा कायम रहती है। सत्गुरु की मेहर गुरसिख की गरीबी समाप्त करके उसे मालामाल कर देती है। उसे सांसारिक रूप से भी और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध कर देती है। गुरु की दया–कृपा उसे निर्भय करती है। उसे इस अहसास से भर देती है कि सृष्टि का स्वामी साथ है तो भय किस बात का और दुख किस चीज का? गुरु की कृपा उसके समस्त दुखों को दूर करके हमेशा के लिए सुखी कर देती है। उसको शरीर के दुख, मन के संताप या धन की कमी दुखी नहीं कर पाती।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्गुरु की कृपा से जब गुरसिख को परमात्मा का ज्ञान मिल जाता है तब उसकी रसना से निरंतर तूही तूही का मधुर स्वर निकलने लगता है। उसकी जुबान से कड़वे बोल या किसी को दुख देने वाले बोल नहीं निकलते बल्कि हमेशा हरि–प्रभु का गुणगान ही होता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ऐसा गुरसिख बड़े भागों वाला है। वह गुरसिख निराला है, अनोखा और अनूठा है। इन्सान को सत्गुरु के चरणों में बैठकर इनकी कृपा का पात्र बनना चाहिए और अपना मानव जन्म सफल करना चाहिए।

भावार्थ : हरजीत निषाद

नदी का घमण्ड

– राजकुमार जैन 'राजन'

द्वापर युग में एक दिन श्रीकृष्ण जी किसी नदी के पास से गुजर रहे थे कि तभी आवाज आई– भगवन्! आप युमना में क्रीड़ा करते हैं क्या मुझे चरण छूने का सौभाग्य नहीं देंगे?

श्रीकृष्ण जी सभी को समान रूप से प्यार करते थे। उस नदी की बात सुनकर बोले– तुम ऐसा क्यों सोचती हो? मैं अवश्य तुम्हारे शीतल जल में स्नान करूंगा। कहो तो रोज ही नहाया करूं। मैं तो इधर से जाता ही हूँ।

यह सुनकर नदी फूली नहीं समायी। उसकी लहरें उछालें लेने लगीं। भगवान श्रीकृष्ण रोज उसी नदी में नहाने लगे। उस नदी के समीप आम के वृक्ष पर मोर–मोरनी का एक जोड़ा रहता था। नदी उनकी घनिष्ठ मित्र थी। मोर उसके किनारे पर आकर नाचता था। फिर मोर–मोरनी निर्मल जल पीकर प्यास बुझाते थे।

एक दिन मोर–मोरनी ने जल पीना चाहा तो नदी बोली– जरा ठहरो! मेरे जल को जूठा न करो। अब मुझ में भगवान स्नान करते हैं। यदि तुम जल पी लोगे तो क्या वे जूठे जल में स्नान करेंगे?

पहले तो मोर को नदी की बात मजाक लगी; पर जब उसे मालूम हुआ कि नदी सच कह रही है तो उसने सोचा 'क्या भगवान को स्नान कराने से नदी इतनी घमण्डी हो गयी है कि हमें दुत्कार रही है। पानी भी नहीं पीने देती।'

मोर को बहुत दुःख हुआ। वह श्रीकृष्ण जी के पास पहुँचा। उसने सारी घटना सुनायी। श्रीकृष्ण जी ने मोर से कहा– तुम दुःखी मत होओ। नदी में घमण्ड आ गया है। उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। मैं तुम्हें भी उतना ही प्यार करता हूँ। तुम तो बहुत सुन्दर हो। मोर प्रसन्न होकर अपने निवास स्थान पर लौट आया।

दूसरे दिन श्रीकृष्ण जी नदी के तट पर आये। उस दिन उन्होंने नदी में स्नान नहीं किया। नदी बोली– प्रभु! लगता है आज आप मुझसे अप्रसन्न हैं।

श्रीकृष्ण जी ने मुस्कुराते हुए कहा– ऐ चंचल नदी, मैं तभी स्नान करूँगा, जब तुम मेरे मुकुट में लगाने के लिए सुन्दर मोर पंख लाकर दोगी।

सुनकर नदी बड़ी परेशान हुई। अब किस मुँह से मोर से पंख माँगू? मगर कोई चारा नहीं था। उसने गर्व छोड़कर मोर को बुलाया और कहा– मोर भैया, मुझे क्षमा करना। मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है।

मोर ने कहा– बोलो क्या बात है? तुम मेरी मित्र हो, मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगा।

नदी ने सारी बात बतायी। मोर ने तुरन्त अपना पंख तोड़कर दे दिया।

श्रीकृष्ण जी ने प्रसन्न मुद्रा में नदी के हाथों से पंख लिया। उसे अपने मुकुट में लगाया और मोर से वरदान माँगने को कहा।

मोर बोला– प्रभु! आपने मेरा पंख अपने मुकुट में लगाकर मुझे जो गौरव दिया है वही सबसे बड़ा वरदान है। अब आप इस नदी में स्नान करें।

–पहले तुम पानी पिओ, तभी मैं स्नान करूँगा। – श्रीकृष्ण जी ने कहा।

नदी का रहा सहा घमण्ड भी चूर हो गया। ❖

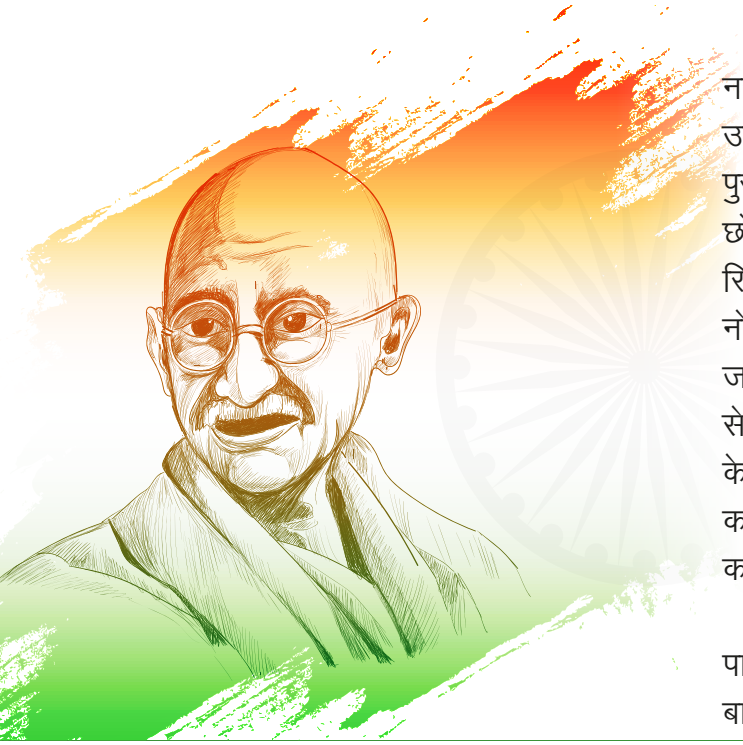

सच्ची राष्ट्रसेवा

– राजेन्द्र थोरात
संपादक, हँसती दुनिया (मराठी)

हमारे राष्ट्रपुरुषों को 'दृष्टा' भी कहा जाता है, दृष्टा यानी भविष्य में होने वाली घटनाओं या स्थितियों का भविष्य वक्ता। जब हम उनके द्वारा दी गई कोई भी चेतावनी को नजरअंदाज कर देते हैं, तो उसके परिणाम भी हमें देखने को मिलते हैं। इसलिए महापुरुषों की जीवनी या उनके विचार सिर्फ पढ़ने–सुनने के लिये नहीं होते, बल्कि आचरण में लाने के लिए होते हैं।

ऐसी ही कुछ घटनाएँ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन से जुडी हुई देखने को मिलती हैं।

यह घटना तब की है, जब गाँधी जी तिहाड़ जेल में सजा काट रहे थे। उनके साथ उनकी पोती भी थी। एक बार उसने लिखने के लिए जेलर से एक नोट बुक माँगी। जिसकी कीमत गाँधी जी की नज़र में बहुत अधिक थी। इस बात से गाँधी जी उस पर नाराज हो गये। उसे कहने लगे, "मैं खुद पुराने कैलेंडर के पीछे खाली पन्ने पर लिखता हूँ। छोटी–छोटी प्रविष्टियाँ करने के लिये टिकटों के रिक्त स्थानों पर लिखता हूँ और तुमने इतनी महंगी नोटबुक क्यों माँगी? इस लागत का बोझ भारत की जनता पर पड़ेगा। हमें कागज का भी उपयोग कम से कम करना चाहिए। कागज की लुगदी बनाने के लिए हजारों पेड़ काटे जाते हैं। इसलिए कागज का कम से कम उपयोग करके प्रकृति की रक्षा भी करनी चाहिए।

एक बार उनके सहकर्मी मणिभाई ने एक गिलास पानी पीने के लिए लिया। आधा गिलास पानी पीने के बाद बचा हुआ पानी वे फेंकने लगे। तभी गाँधी जी ने कहा, "मणिभाई, उतना ही पानी लेना चाहिए, जितना तुम्हें पीना है। अगर हर भारतीय आधा गिलास पानी भी बचाए तो करोड़ों लीटर पानी बचेगा। कुछ इलाकों में तो पानी के लिए मीलों तक पैदल चलना पडता है। पानी का संयमित प्रयोग करें। अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। संसाधनों का संयम से उपयोग और पर्यावरण की रक्षा ही सच्ची राष्ट्रसेवा है।

गाँधी जी के बारे में एक बात और कही जाती है कि उन्होंने देखा कि कई गरीबों के बदन पर कपड़े तक नहीं हैं। तब से उन्होंने केवल धोती पहनना शुरु कर दिया।

ऐसे थे हमारे महात्मा गाँधी जी। उनका जन्मदिन हम दो अक्टूबर को मनाते हैं। अनेकों और भी ऐसे उदाहरण हैं। वह राष्ट्र सेवा में अपना सारा समय बिताते थे। भारतवर्ष की आज़ादी में उनकी मुख्य भूमिका रही। अनेकों बार जेल भी गए लेकिन अपने कर्तव्य पथ से कभी भी अडिग नहीं हुए। ऐसे महात्मा हमेशा हमारे लिए प्रेरणा–स्रोत रहते हैं। ❖

प्रार्थना

– संजय कुमार चतुर्वेदी

प्रभु जी हमको दो वरदान,
जीवन में हम बनें महान।

गुरुवर दो तुम विद्या दान,
करूँ तुम्हारा ही गुणगान।

हो न कभी मुझ से अपमान,
करूँ सदा सबका सम्मान।

रखूँ देश का ऊँचा मान,
देशहित में निकलें प्राण।

वादविवाद का न हो भान,
रहें प्रेम से सब इन्सान।

जागो हुआ सवेरा

– दीपक कुमार 'दीप'

जागो बच्चों हुआ सवेरा,
आलस में न समय गंवाओ।
उठकर जल्दी सुबह सवेरे,
सारे सुख सहज ही पाओ।।

सुबह जो जल्दी उठता है,
स्वस्थ वो हरदम रहता है।
आलस जो भी करता है,
स्वयं वह दुःख से भरता है।।

सुबह उठ व्यायाम करो,
अधूरे सारे काम करो।
परिश्रम से जब थक जाओ,
थोड़ी देर आराम करो।।

ज्ञान का दीपक जला कर,
दूर करो अज्ञान अंधेरा।
'दीप' सबसे यही है कहता,
जागो–जागो हुआ सवेरा।।

किताब के पन्ने

– विपिन कुमार

निशि का मन गणित छोड़कर कोई भी विषय पढ़ने में नहीं लगता था। वह रात–दिन गणित के सवालों में ही उलझी रहती। फलतः वह परीक्षा में दूसरे विषयों में फेल हो जाती। घर में माता–पिता और विद्यालय में शिक्षक समझाते– देखो निशि, जीवन में सफलता के लिए सभी विषयों का ज्ञान आवश्यक है। तेज विद्यार्थी को सभी विषयों पर ध्यान देना चाहिए।

किन्तु निशि के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। वह अपनी ही लीक पर चलती आ रही थी।

अन्य दिनों की ही तरह उस दिन भी निशि गणित के सवाल बना रही थी कि उसे नींद आने लगी। वह बिछावन पर ही लुढ़क गई। उसका बस्ता वहीं बगल में पड़ा था। पेंसिल, कलम, ज्योमेट्री बॉक्स एवं गणित की कापी सबके सब उसके पांव की तरफ छितराए पड़े थे।

आँख लगते ही उसने देखा कि संस्कृत की किताब उसके थैले से निकलकर एक सफेद परी बन गई और कमरे से बाहर जा रही है। साथ में उलाहना भी दे रही है– "निशि, अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं रहूंगी। जब तुम मुझे पढ़ती ही नहीं हो, तब यहाँ रहने से क्या फायदा?"

निशि अभी कुछ उत्तर दे पाती कि हिन्दी की किताब के पन्ने जोर से फरफराए और किताब एक तितली बनकर कमरे से बाहर निकलने लगी। उसने

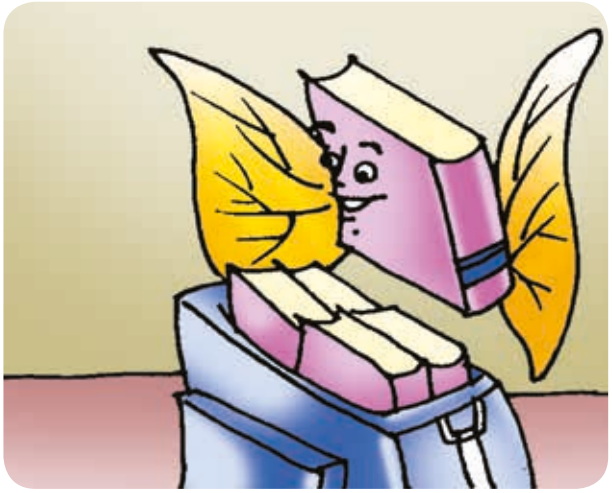

निशि को घूरते हुए कहा– ''निशि मैं अब तुम्हारे थैले में नहीं रहूंगी। तुम मुझे कभी भी नहीं पढ़ती हो। ... मगर सुनो, मेरे ज्ञान के बिना तुम न तो ठीक से बोल पाओगी न ही लिख पाओगी।''

निशि अपनी शेष किताबों को थैले से निकलने नहीं देने के लिए अभी थैले का बटन लगाना ही चाहती थी कि सामाजिक विज्ञान की पुस्तक के पन्ने के सभी चित्र एवं नक्शे एकाएक मिट गये। पुस्तक के पन्ने पहले सफेद हो गये फिर वे फरफराकर अलग होकर रूई के छोटे–छोटे फाहे बनकर आकाश में उड़ गये। साथ में उन्होंने निशि को चेतावनी भी दी– ''निशि, मैं जा रही हूँ क्योंकि तुमने गणित के

चक्कर में मुझे कभी पढ़ा ही नहीं। लेकिन याद रखना बिना मेरे ज्ञान के आदमी दीन–दुनिया से अनभिज्ञ ही रह जाता है। अपने इतिहास, समाज, देश, कर्तव्य एवं अधिकार के बारे में आखिर तुम कैसे जानोगी?''

निशि कुछ बोल पाती कि उसने देखा उसकी अंग्रेजी वाली पुस्तक एकाएक हरी हो गई और तोता बनकर उड़ने लगी। उड़ते–उड़ते वह अपनी पीड़ा एवं रोष भी प्रकट कर गई– निशि तुम बिना मुझे जाने किस तरह गणित के प्रश्नों को समझ पाओगी? कैसे तुम इंजीनियरिंग, मेडिकल, कम्प्यूटर आदि की किताबें पढ़ पाओगी?

निशि कुछ बोलना ही चाहती थी कि उसने देखा उसकी सर्वप्रिय पुस्तक गणित– एक काली छाया बनकर वहाँ से गायब हो गई। निशि ने सुना, वह काली छाया कह रही थी– ''निशि अब मैं अकेली रहकर क्या करूँगी? तुमने मेरी सभी बहनों को घर से बाहर निकाल दिया, तब यहाँ मेरा क्या काम! तुमने तो मुझे उन सबकी नजर में कलंकित कर दिया। देखती नहीं मेरा बदन! शर्म एवं दुख से काली हो गई हूँ मैं।''

उस काली छाया की बात सुनकर निशि चिल्लाती हुई उसे पकड़ने को दौड़ी, इस क्रम में उसकी नींद टूट गई। उसे अपनी गलती का बोध हो चुका था। उसने अपनी छितराई किताब, कॉपी, पेंसिल आदि को समेटते हुए संकल्प लिया– आज से मैं सभी विषयों को पढ़ूंगी।

निशि ने अपने संकल्प का पालन किया और अगली परीक्षा में वह अपनी कक्षा में प्रथम आई। ❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

मोहनदास रात में जब घर वापस जाता हैं, तभी एक गाड़ी से उसका एक्सीडेंट हो जाता है जिसमें वह अपना एक पैर खो देता हैं।

मोहनदास के एक्सीडेंट की खबर मिलते ही मालती और अभिषेक हॉस्पिटल पहुंच जाते हैं।

मोहनदास के एक्सीडेंट के बाद मालती को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब घर कैसे चलेगा। यही सोच-सोच कर वह परेशान हो रही थी।

माँ, पिताजी! देखिए मैं कक्षा में प्रथम आया हूँ।
शाबाश बेटे! लेकिन अब तुम्हें आगे पढ़ाने के लिए हमारे पास पैसे नही बचे हैं।

माँ, क्यों ना हम पिताजी का ठेला फिर से लगाना शुरू कर दें। इससे हमारी परेशानियां काफी कम हो जाएंगी।
ठीक है बेटा! हम कल ही बाजार जाकर सारा सामान लाते हैं।

पाव भाजी
अगले दिन मालती और अभिषेक बाज़ार जाकर सारा सामान लाकर घर पर ही पाव भाजी तैयार करते हैं। और अपना ठेला लेकर बाज़ार की तरफ चल देते हैं।

शिक्षा : मुसीबत के समय हिम्मत से काम लेना चाहिए।

लेसर किरणें

– कैलाश जैन

विज्ञान के अनेकानेक आविष्कारों में 'लेसर' का आविष्कार बीसवीं सदी की एक अति महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेसर की उपयोगिता सीमातीत है। विज्ञान के अन्य आविष्कारों की भांति जहाँ यह चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक चमत्कार साबित हुई है, वहीं इसके संहारक और विध्वंसात्मक इस्तेमाल की आशंकाएँ भी बहुत व्यापक हैं। वस्तुतः यह बहुत ही सम्भावनाओं से भरा आविष्कार है।

इस्पात की भारी–भरकम चद्दरों को पलभर में छेद देने वाली लेसर मनुष्य की आँख जैसे कोमलतम अंग की शल्य चिकित्सा भी उसी दक्षता से कर पाने में सक्षम है।

'लेसर' नाम अंग्रेजी के 'एल.ए.एस.ई.आर.' (LASER) अक्षरों से बना है, जिसका पूर्ण रूप है 'लाईट एम्प्लीफिकेशन बाई सिटुमलेटेड एमिशन ऑफ रेडियेशन'। इसके सर्वप्रथम आविष्कार का श्रेय अमेरिकी वैज्ञानिक टी.एच. माइमन को जाता है, जिन्होंने 1917 में वैज्ञानिक आइंस्टाइन के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को आधार बनाकर यह अजूबा कर दिखाया।

लेसर प्रकाश का ही एक रूप है, किन्तु जहाँ साधारण प्रकाश का निर्माण सात रंगों के मिश्रण से होता है, वहीं लेसर किरणों में केवल एक रंग होता है। साधारण प्रकाश की प्रकृति चारों तरफ फैलने की होती है, जबकि लेसर एक ही दिशा में चलती है और इसकी सारी शक्ति एक पतली धार में संग्रहित हो जाती है, जो कुछ ही मिलीमीटर चौड़ी होती है। यदि लेसर के प्रकाश को एक सेंटीमीटर के दस हजारवें भाग के बराबर स्थान पर केन्द्रित किया जाए तो लेसर–प्रकाश की तीव्रता सूर्य के प्रकाश के मुकाबले लाखों गुना अधिक हो जाती है। पृथ्वी से तीन लाख चौरासी हजार चार सौ किलोमीटर दूर स्थित चन्द्रमा के धरातल पर एक पैनी लेसर किरण समूह को भेजा गया। यह रास्ता उसने मात्र एक सेकिण्ड में तय किया और इस किरण ने चन्द्रमा के लगभग दो वर्ग मील के क्षेत्र को प्रकाशमान कर दिया।

सन् 1960 में टी.एच. माइमन ने कृत्रिम लाल मणि से एक हाथ में पकड़े जा सकने वाला पहला लेसर बनाया। वह रूक–रूककर लाल प्रकाश देता है। इस कृत्रिम लाल मणि की छड़ के दोनों सिरों को चमकदार दर्पण जैसी पॉलिश दे दी जाती है, जिससे एक सिरा तो दर्पण की तरह प्रकाश को पूर्णतः परावर्तित करे तथा दूसरा सिरा आंशिक रूप से पारदर्शक रहे। इस मणि के इर्द–गिर्द एक ट्यूब लगाई जाती है, जिसमें विद्युत–विसर्जन के माध्यम से प्रकाश पैदा किया जाता है। यह सौरमण्डल की सर्वाधिक चमकदार रोशनी होती है तथा एक सेकिण्ड के अल्पसमय में तीस किलोवाट शक्ति की धड़कन उत्पन्न करती है।

कृत्रिम लाल मणि के अलावा अब तक सौ से अधिक पदार्थों में लेसर प्रकाश उत्पन्न करने में सफलता मिल चुकी है। इसमें काँच, प्लास्टिक तथा द्रव व गैसें शामिल हैं। विभिन्न लेसर में आर्गन लेसर, रूबी लेसर, अमोनियम लेसर, कार्बनडाइऑक्साइड लेसर, येग लेसर आदि प्रमुख हैं। लेसर अधिकांशतः गैस लेसर के रूप में ही होती हैं। हिलियम तथा नियोन लेसर से हमें लाल धार प्राप्त होती है। हिलियम केडियम लेसर से नीली और आरमोन इयन लेसर से हरी धार प्राप्त होती है।

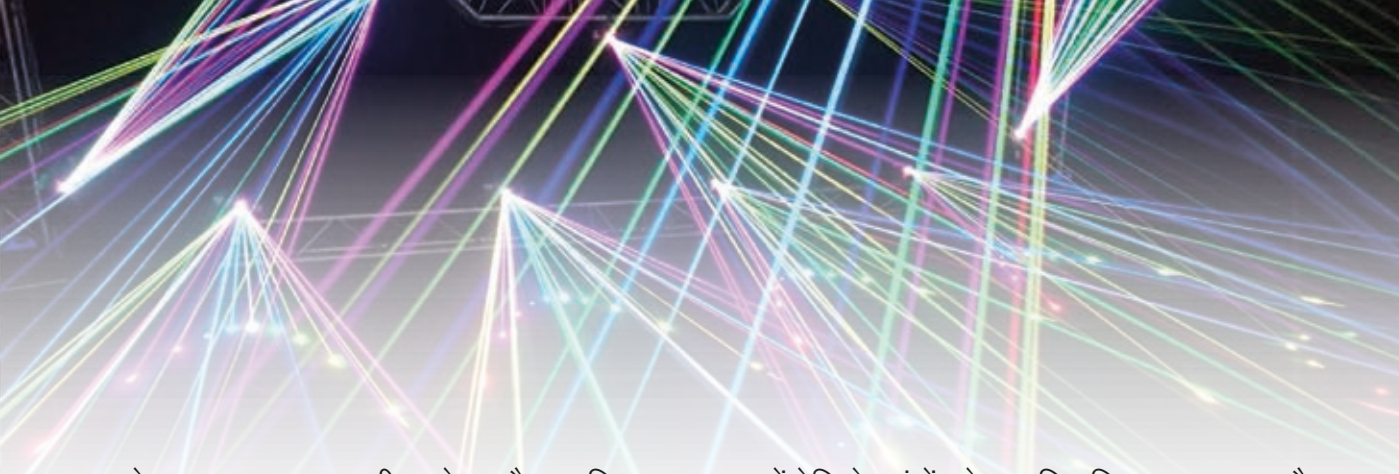

लेसर एक बहुआयामी खोज है। यदि हम चिकित्सा के क्षेत्र में लेसर की उपयोगिता को देखें तो पाएँगे कि इस आविष्कार ने सर्जरी के क्षेत्र में सचमुच चमत्कार कर दिखाया है। आँख जैसे नाजुक और जटिल अंग के रोगों की शल्य–चिकित्सा में लेसर किरणों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाने लगा है। आँख के 'रेटिना' के ऑपरेशन में लेसर किरणों की उपयोगिता ने सचमुच क्रांति कर दी है। यह अति–सूक्ष्म और जोखिम भरा ऑपरेशन अब बिना किसी चीर–फाड़ के आसानी से किया जा सकता है। नाक, कान के अंदरूनी भागों में जहाँ सर्जन का चाकू नहीं पहुँच सकता, अब लेसर द्वारा ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध है। इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें खून तक नहीं निकलता क्योंकि हरी लेसर किरणें खून को ऊपर ही जमा देती हैं। इसके अतिरिक्त, दिमाग तथा रीढ़ की हड्डी के ऑपेरशन, आँतों की सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी, कैंसर आदि बीमारियों के उपचार में लेसर का उपयोग हो रहा है। कोलेस्ट्रोल आदि पदार्थों से धमनियों में पैदा हुए अवरोध को भी लेसर किरणों से दूर किया जाता है। किडनी–स्टोन को बिना ऑपरेशन के लेसर किरणों से गला दिया जाता है। लेसर किरणों पर आधारित एक ऐसी छड़ी बनाई गई है, जो नेत्रहीन व्यक्तियों को रास्ता बताती है और उनका मार्गदर्शन करती है।

लेसर का इस्तेमाल संचार साधनों में रेडियो–तरंगों के रूप में किया जा रहा है। एक लेसर किरण पर लाखों रेडियो तरंगों को प्रसारित किया जा सकता है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी लेसर की उपयोगिता अद्वितीय साबित हुई है। यह धातु को जोड़ने, काटने, छेद करने, टांका लगाने आदि कार्य में प्रयुक्त होती है। यह हवाई जहाज को सही मार्ग पर रखने में भी काम आती है। यह हीरा तथा प्लेटिनम जैसे सख्त व कठोर पदार्थों को काटने व उनमें छिद्र करने का कार्य कुशलता से करती है। आज पुलों तथा गगनचुंबी इमारतों की सीध लेने का कार्य भी लेसर किरणों की मदद से किया जाता है।

अंतरिक्ष अनुसंधान अभियान में भी लेसर का प्रयोग बहुत ही कामयाब रहा है। इससे तारों और ग्रह–नक्षत्रों की दूरी, स्थिति तथा उपलब्ध तत्वों आदि की मात्रा पता लगाने में मदद मिलती है। इसके अलावा मौसम–विज्ञान, भूकम्प की जानकारी, कम्प्यूटर, प्रदूषण नापने, होलोग्राम विधि से त्रिआयामी तकनीक का विकास जैसे न जाने कितने काम लेसर द्वारा किए जा रहे हैं।

लेसर का आविष्कार इतने क्षेत्रों में कारगर सिद्ध हुआ है, जितना कि कोई अन्य आविष्कार नहीं हुआ है। इसके विस्तृत कार्य–क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए कई लोग 'अलादीन का चिराग' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में लेसर ने उन अनेकों आश्चर्यों को साकार कर दिया है, जिन्हें कल तक असम्भव या मात्र कपोल कल्पना माना जाता था। अभी भी लेसर के उपयोग की अनन्त सम्भावनाएं हैं, जिन्हें पूरी करने में दुनियाभर के वैज्ञानिक जी–जान से जुटे हुए हैं।

अनूठा न्याय

– मीना

बात जरा पुराने जमाने की है। एक बार दो व्यक्ति तीर्थयात्रा के लिए जा रहे थे। रास्ते में उन्हें भूख लग आई थी। इसलिए वे एक पेड़ की छांव में बैठ गये। उन लोगों ने अपना–अपना खाना निकाल लिया। एक के पास तीन रोटियां थीं और दूसरे के पास पाँच। वे भोजन शुरू करने ही वाले थे कि एक और व्यक्ति वहाँ आ गया। दोनों ने उससे भी खाना खाने को कहा। वह राजी हो गया। तीनों ने साथ मिलकर खाना खाया। भोजन खत्म होने पर उस व्यक्ति ने खुश होकर उन्हें आठ रुपये दिये और कहा– इन रुपयों को तुम आपस में बांट लेना। वह व्यक्ति रुपये देकर चला गया।

इधर उन दोनों यात्रियों में पैसे को लेकर झगड़ा हो गया। जिस यात्री की पाँच रोटियां थीं, वह चाहता था कि उसे आठ में से पाँच रुपये मिले जबकि तीन रोटियों वाला यात्री आधे यानी चार रुपये चाहता था। आखिर जब वे आपस में कोई फैसला नहीं कर सके तो दोनों ने उस राज्य के राजा के पास चलने का निश्चय किया।

वहाँ का राजा अपने अनोखे और निष्पक्ष न्याय के लिए प्रसिद्ध था। राजा ने सारी बात सुनने के बाद पूछा– तीसरे यात्री ने कितनी रोटियां खाईं?

दोनों ने जवाब दिया– यह तो नहीं बताया जा सकता क्योंकि हमने साथ खाना खाया था और प्रत्येक रोटी के बराबर तीन टुकड़े कर लिये थे।

राजा ने कहा– इसका मतलब यह हुआ कि तुम सबने बराबर रोटियां खाईं?

दोनों ने सहमत होते हुए कहा– हाँ।

तब राजा ने कहा– प्रत्येक रोटी के तीन टुकड़े किये गये, इस तरह कुल आठ रोटियां के चौबीस टुकड़े हुए हैं न?

कुछ देर सोच–विचार करने के बाद दोनों यात्रियों ने हामी भर दी।

तब राजा ने कहा– इससे यह बात साफ जाहिर है कि तीनों ने आठ–आठ टुकड़े खाये। तीन रोटियां वाले यात्री ने अपनी रोटियों के कुल नौ टुकड़ों में से केवल एक टुकड़ा उस यात्री को दिया जबकि पाँच रोटियों वाले व्यक्ति ने अपने पन्द्रह टुकड़ों में से सात टुकड़े उस यात्री को दिये। इस प्रकार पाँच रोटियों वाले यात्री ने अधिक त्याग किया। आठ रुपयों में से सात रुपये पाँच रोटियों वाले व्यक्ति को मिलने चाहिए जबकि तीन रोटियों वाले यात्री को केवल एक रुपया मिलना चाहिए।

तीन रोटियों वाला यात्री इस तर्कपूर्ण न्याय का विरोध न कर सका और चुपचाप एक रुपया लेकर टूटे और थके मन से चल दिया। ❖

करना अच्छे काम

– शोभा शर्मा

घर–बाहर सब तुमको चाहें,
ऊँचा होगा नाम।
छोड़ बुराई करो भलाई,
करना अच्छे काम।।

अच्छे बच्चे मुस्कानों के,
बिखराते हैं फूल।
गलती अगर कहीं हो जाए,
तुरन्त सुधारे भूल।।

अच्छी बातें सीखो हरदम,
सुबह मिलें या शाम।

कभी किसी से झूठ न बोलो,
सच के गाओ गीत।
मान और सम्मान मिलेगा,
होगी हरदम जीत।।

वो अपने हैं तुम अपने हो,
सबका अपना धाम।

अनुशासन

– हरप्रसाद रोशन

काम आज का आज करें,
क्यों टालें हम कल पर।
अच्छा हमको बनना है,
अनुशासन के बल पर।।

रोज सुबह जल्दी उठना,
हमको हर दिन भाता।
काम समय पर पूरा कर,
अपना मन हरषाता।।

कर्मशील हम बालक हैं,
मोल समय को जानें।
गया वक्त हाथ न आता,
सच्चाई को मानें।।

अलबेला पक्षी कीवी

– जयेन्द्र

दक्षिणी गोलार्द्ध के हरे–भरे जंगलों में पाया जाने वाला एक सबसे छोटा पक्षी है कीवी। यूँ तो इसका आकार मुर्गे जितना होता है और शरीर केवल 30–35 से.मी. लम्बा। इस पक्षी को उल्लू का भाई भी कह सकते हैं क्योंकि इसे दिन के समय कम दिखाई देता है। रात्रि के गहरे अन्धेरे में इसे साफ दिखाई देता है। इसी कारण यह रात्रि में ही भोजन की तलाश में निकलता है।

यूँ तो इस पक्षी की कई प्रजातियां हैं। लेकिन कुछ खास प्रजातियां ये हैं– ग्रेट स्पोटेड कीवी, लिटल स्पोटेड कीवी, नॉर्थ आइलैंड ब्राउन कीवी, ओकोरीटो ब्राउन कीवी, सर्दर्न टोकोइका और हास्ट टोकोइका। कीवी न्यूजीलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह भी है।

इस पक्षी की चोंच बहुत लम्बी, तीखी और मजबूत होती है जो इसे जमीन के अन्दर छिपे हुए कीड़े–मकोड़े को ढूंढने में मदद करती है। इसकी नाक जो चोंच के सिरे पर होती है, अपना शिकार सूंघ लेती है और उसे पकड़ने में देर नहीं लगाती।

यह एक आश्चर्य की बात है कि दस दिनों तक नवजात कीवी कुछ नहीं खाता। 28–30 दिन का हो जाने पर यह अपना घर छोड़ देता है तथा शत्रुओं से अपनी रक्षा स्वयं करता है। यूँ कीवी ऐसा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता लेकिन तेजी से भाग जरूर सकता है।

अण्डों की दुनिया में कीवी के अण्डों की एक अलग पहचान भी है क्योंकि इसका एक ही अण्डा करीब 500 ग्राम का हो सकता है। जिसका रंग सफेद या दूधिया होता है। इसकी विभिन्न प्रजातियों के अण्डे रंग–बिरंगे होते हैं। जैसे लाल, गुलाबी, श्वेत–श्याम, पीले–गुलाबी, सफेद–गुलाबी आदि। ये वजन में 200 से 300 ग्राम के मध्य होते हैं तथा बड़े चमकीले व खबूसूरत होते हैं।

न्यूजीलैंड के विभिन्न द्वीपों में पाया जाने वाला पक्षी कीवी एक विलक्षण प्राणी है। इसका शरीर मटमैले भूरे रंग का होता है तथा इस पर भूरे रंग के मुलायम चमकदार बाल होते हैं। कीवी के डैने बहुत छोटे होते हैं। अतः यह उड़ नहीं सकता। कीवी एक बड़े जंगली मुर्गे के बराबर ऊँचा होता है। सामान्यतया इसकी ऊँचाई पैंतालिस से पचास सेंटीमीटर तक होती है। कीवी की पूँछ नहीं होती तथा चोंच काफी लम्बी होती है। इसी चोंच के सिरों पर नासिका रन्ध्र होते हैं। ये नासिका रन्ध्र कीवी को भोजन की तलाश में विशेष रूप से सहायता करते हैं। कीवी का प्रमुख भोजन जमीन पर रेंगने वाले छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े तथा केंचुए हैं। इन्हें पाने के लिए वह अपनी घ्राण शक्ति का प्रयोग करता है तथा जमीन के भीतर छोटे–छोटे बिलों और छेदों में चोंच डालकर केंचुओं तथा अन्य कीड़ों–मकोड़ों को बाहर निकाल लेता है।

पक्षी विशेषज्ञों का मत है कीवी अपनी प्रवृत्ति से आलसी था। इसे सूर्य का प्रकाश पसन्द नहीं था। अतः यह सारे दिन जंगलों में किसी सुरक्षित स्थान पर आँखें बन्द किये पड़ा रहता था और रात में भोजन की तलाश में निकलता था। इसका परिणाम यह हुआ कि इसके पंखों की उड़ने की क्षमता ही समाप्त हो गयी बल्कि इसकी दृष्टि भी इतनी कमजोर हो गई

कि इसे अपने पास का भी प्राणी ठीक से दिखाई नहीं पड़ता है।

कीवी एक अत्यन्त डरपोक तथा शर्मिला जीव है तथा जंगलों में नमी वाले भागों में रहना अधिक पसन्द करता है। रात्रि में भोजन की खोज करते समय शत्रु निकट होने पर यह उसका सामना नहीं करता बल्कि एक विचित्र प्रकार की आवाज करता हुआ डरकर भागता है। केंचुओं और कीड़ों–मकोड़ों के अतिरिक्त इसे रसदार फल बहुत पसन्द हैं।

कीवी अपना घोसला जमीन पर ऊँचे स्थान पर बने बिलों में बनाता है। यहीं मादा कीवी एक बार में एक से तीन तक सफेद रंग के अंडे देती है। ये अंडे काफी बड़े तथा भारी होते हैं। कभी–कभी इनका वजन आधा किलो तक होता है। शुतुरमुर्ग, रिया तथा कैसोवरी के समान अंडे सेने का काम नर कीवी करता हैं। इन अंडों से बच्चे निकलने में ढाई से तीन माह तक का समय लगता है। ढाई माह के सफर के उपरान्त अण्डों में से जब चूजा निकलता है तो उसकी आँखें पूरी तरह से खुली होती हैं और शरीर पर कोमल मुलायम बाल होते हैं। बच्चों की परवरिश का कार्य भी नर कीवी करता है। यह इनकी तब तक देखभाल करता है जब तक कि ये आत्मनिर्भर नहीं हो जाते।

❖

प्रमुख दिवस : अक्टूबर माह

1 अक्टूबर	विश्व वृद्धजन दिवस
2 अक्टूबर	गाँधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती
3 अक्टूबर	विश्व आवास दिवस
8 अक्टूबर	भारतीय वायुसेना दिवस
9 अक्टूबर	विश्व डाक दिवस
9 से 15 अक्टूबर	राष्ट्रीय डाक सप्ताह
10 अक्टूबर	विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
10 से 17 अक्टूबर	राष्ट्रीय विधिक सहायता सप्ताह
13 अक्टूबर	विश्व दृष्टि दिवस
14 अक्टूबर	विश्व मानक दिवस
15 अक्टूबर	विश्व ग्रामीण महिला दिवस
16 अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस
17 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस
21 अक्टबूर	विश्व आयोडीन अल्पता विकार निवारण दिवस, आजाद हिन्द फौज का स्थापना दिवस
24 अक्टूबर	संयुक्त राष्ट्र दिवस
27 अक्टूबर	पैदल सेना दिवस
30 अक्टूबर	विश्व मितव्ययता दिवस
31 अक्टूबर	राष्ट्रीय एकता दिवस

– संग्रहकर्ता : ओम सिंह

अनमोल वचन

- विवेक जीवन का नाम और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है।
- सोने का प्रत्येक धागा, मूल्यवान होता है। उसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान होता है।
- जिस मनुष्य के हृदय में शीतलता निवास करती है। संसार भर में कोई मनुष्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता।
- प्रकाश हो जाने पर अन्धकार इस प्रकार लुप्त हो जाता है। जैसे ज्ञान के उदय होने पर कोई संशय नहीं रहता।
- साहस के अभाव में संकल्प धरे रह जाते हैं।
- आत्मा में परमात्मा का साक्षात्कार करना ही जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए।
- स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्म–संयम। ये तीनों ही जीवन को आलौकिक शक्ति की ओर ले जाते हैं।
- व्यवहार एक दर्पण है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है।
- कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। अतः हमें कर्म का अहसानमंद होना चाहिए।
- सभ्यता चरित्र का रूप है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दिखाती है।
- गुरुजन रास्ता दिखाते हैं, चलना आपको स्वयं पड़ता है।
- इस धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह है माँ के चरणों में।
- मूर्खों से प्रशंसा के राग सुनने की अपेक्षा बुद्धिमान व्यक्ति की फटकार सुनना अधिक श्रेयष्कर है।
- समझदारी का एक लक्ष्य यह है कि दुस्साहस न करे।
- मानव जितना महान होगा उतना ही नम्र होगा।
- सुन्दर सदा शुभ नहीं होता किन्तु शुभ सदा सुन्दर होता है।
- यदि आदमी सीखना चाहे तो उसकी हरेक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।
- अग्नि स्वर्ण की परीक्षा करती है और प्रलोभन सच्चे मानव की।
- शिष्टता ही व्यवहार का सौन्दर्य है।
- शुभ कर्मों से शक्ति बढ़ती है।
- आदर्शवादी व्यक्ति वह है जो दूसरों की समृद्धि में सहायक हो।
- बिना निराश हुए पराजय को सह लेना, पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।
- अपवित्र कल्पना भी उतनी ही घातक है जितना की अपवित्र कर्म।
- प्रशंसा के भूखे यह साबित कर देते हैं कि वे योग्यता में कंगाल हैं।
- अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है।
- निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता।
- सत्यपरायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता।

संकलनकर्ता : प्रियंका

धरती का शृंगार हैं पेड़

– डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

आओ मिलकर बाग लगायें,
सुन्दर नये लगायें पेड़।
तेज धूप सदा सहता है,
सबको छाया देता पेड़।।

जाड़ा गरमी बरसातों में,
नहीं तनिक अकुलाता पेड़।
पथिकों को ये छाया देकर,
अपने पास बुलाता पेड़।।

आम आंवला जामुन कटहल,
रोपो मधुर फलों के पेड़।
औषधि जड़ी–बूटियों वाली,
देता रहता है हरदम पेड़।।

तरह–तरह के फल देता है,
मुझको स्वस्थ बनाता पेड़।
सबको ऑक्सीजन देता है,
कार्बन खुद पी लेता पेड़।।

नीम–आंवला–पीपल पाकर,
रस की धार बहाता पेड़।
शीतल हवा हमें देती है,
धरती का शृंगार हैं पेड़।।

नन्हा पौधा

– गोविन्द भारद्वाज

नन्हा पौधा बनकर पेड़,
देता है हरियाली ढेर।

फल–फूल नित हमको बांटे,
रोग–दोष सब यही छांटे।

आम–पीपल–नीम हो बेर,
देता है हरियाली ढेर।

छांव इनकी मिले भरपूर,
कभी न हों ये हम से दूर।

पौधे लगाओ न हो देर,
देता है हरियाली ढेर।

कोमल पत्ते नरम डाली,
राग सुनाती पीहू काली।

मत करो कभी इनसे छेड़,
देता है हरियाली ढेर।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

घमंडीलाल अग्रवाल

प्रश्न : फर्श पर लुढ़कती हुई गेंद दिशा क्यों बदल लेती है?

उत्तर : वस्तु की दो स्थितियाँ होती हैं– विराम तथा गति। जब तक किसी भी वस्तु पर बाहरी बल न लगाया जाए उसकी स्थिति में परिवर्तन असम्भव है। लुढ़कती हुई गेंद में गति होती है जब गेंद वायु के सम्पर्क में आती है तो उसकी दिशा में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि वायु बल का कार्य करती है। इसी वजह से ही लुढ़कती हुई गेंद अपनी दिशा बदलने में सक्षम हो पाती है।

प्रश्न : हाथों को आगे–पीछे करने की ध्वनि तुम्हें क्यों नहीं सुनाई पड़ती है?

उत्तर : जब तुम अपने हाथों को आगे–पीछे करते हो तो हाथों में कम्पन की आवृत्ति 20 से कम होती है। यह तो सर्वविदित है कि मनुष्य केवल 20 से 20,000 कम्पन प्रति सेकिण्ड के बीच की आवृत्ति वाली ध्वनि ही सुन सकता है। अतः तुम्हें हाथों को आगे–पीछे करने की ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती है।

प्रश्न : यदि कार्क के टुकड़े को पानी में डुबोकर छोड़ दिया जाए तो वह ऊपर उठकर पानी की सतह पर क्यों आ जाता है?

उत्तर : जब कोई वस्तु किसी द्रव अथवा गैस में डुबोई जाती है तो वह सदैव ऊपर की ओर एक बल का अनुभव करने लगती है। इस बल को हम 'उत्प्लावन बल' कहते हैं। कार्क के टुकड़े को जब पानी में डुबोकर छोड़ दिया जाता है तो पानी द्वारा कार्क पर ऊपर की ओर उत्प्लावन बल लगाया जाता है। यह बल कार्क के भार से अधिक होता है। परिणास्वरूप, कार्क ऊपर की ओर पानी की सतह पर आ जाता है।

प्रश्न : मछली अपनी थैली को फुलाकर अथवा सिकोड़कर पानी में नीचे–ऊपर क्यों तैरती है?

उत्तर : मछली अपनी थैली को फुलाकर उसमें वायु भर लेती है जिससे थैली का आयतन बढ़ जाता है। फलस्वरूप, हटाए गये पानी का भार मछली के भार से बढ़ जाता है तथा मछली सुगमता से पानी में तैरती रहती है (क्योंकि वस्तु द्वारा हटाए गये पानी का भार वस्तु के भार से अधिक होने पर ही वह तैर सकती है।) थैली के सिकुड़ने से वायु निकल जाती है तथा विपरीत क्रिया होती है। अतः मछली पानी के नीचे चली जाती है।

दोषी कौन?

– डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य

बहुत दिनों पहले की बात है। आदेगाँव नामक राज्य में सतेन्द्र सिंह नाम के एक राजा राज्य किया करते थे। उनकी पत्नी का नाम रानी अभिलाषा देवी था। राजा सतेन्द्र सिंह बहुत ही मधुर भाषी, न्यायप्रिय और शान्त स्वभाव के थे। उन्होंने अपने राज्यमंत्री नागोत्रा को यह आदेश दे रखा था कि प्रजा को कभी कोई कष्ट न होने पाए, राज्य में प्रजा के सुख–दुख की जानकारी से हमेशा हमें अवगत कराया जाना चाहिए। चूंकि राजा की कोई सन्तान नहीं थी इसलिए वे प्रजा को ही अपनी सन्तान मानते थे।

राज्य कार्य से निपटने के बाद राजा कभी–कभी अपने मनोरंजन के लिए शिकार पर भी जाया करते थे। चूंकि राजा सतेन्द्र सिंह को शिकार खेलने का बहुत शौक था। इसीलिए वे शिकार खेलने जाते समय नागोत्रा को भी अपने साथ ले जाया करते थे।

एक दिन हमेशा की तरह राजा और मंत्री दो सजीले सुन्दर घोड़ों पर शिकार के लिए निकल पड़े।

नागोत्रा आज आखेट खेलने क्यों न अंडिया मानेरी के जंगलों की ओर चले। राजा ने राजमंत्री को चलने के लिए कहा।

–जी महाराज जैसी आपकी इच्छा।– मंत्री ने जवाब दिया।

और उन दोनों के घोड़े अंडिया मानेरी के जंगलों की ओर सरपट दौड़ पड़े। वह इतना घना जंगल था जहाँ वृक्षों के कारण दिन में भी अँधेरा छाया रहता था। राजा व मंत्री शीघ्र ही उस जंगल में पहुँच गए।

तभी उन्हें एक हिरण नजर आया। राजा ने शीघ्रता से अपने धुनष पर बाण साधा लेकिन तब तक भयभीत हिरण कुलांचे भरता झाड़ियों के पीछे गायब हो गया। यह देखकर राजा ने अपना घोड़ा उसी ओर मोड़कर हिरण के पीछे लगा दिया।

राजा सतेन्द्र ने उसे बहुत ढूंढ़ा पर वह इस बार उन्हें कहीं भी नजर नहीं आया। तभी उन्हें ढूंढ़ते हुए मंत्री उनके समीप आ पहुँचा।

–कुछ नहीं शिकार हाथ से निकल गया।– राजा ने बुझे मन से जवाब दिया।

–जाने दीजिए राजन्! हम दूसरा शिकार ढूंढ़ते हैं चलिये।– मंत्री ने राजा से कहा।

–हमें जोरों से प्यास लगी है। नागोत्रा! प्यास के मारे हमारा गला सूखा जा रहा है।– राजा ने अपने सूखे होठों पर जीभ फेरते हुए कहा।

–ओह पानी... मैं अभी पानी की तलाश कर लौटता हूँ।

राजा को अपने पीछे सूखे पत्तों के चरमराने की आवाज सुनाई दी। राजा चौंककर शीघ्रता से मुड़े तो देखा एक बहेलिया कंधे पर जाल डाले उनकी ओर ही चला आ रहा था। करीब आकर उसने राजा को प्रणाम किया।

–कौन हो तुम?– राजा ने परिचय जानना चाहा।

–मैं एक गरीब बहेलिया हूँ राजन्।

–तुम तो इस वन से अच्छी तरह परिचित हो ना? क्या तुम हमारे लिए पीने के लिए पानी का प्रबन्ध कर सकते हो?

–जी हाँ। यहीं पास ही में एक स्वच्छ और मीठे जल का तालाब है।– बहेलिए ने आदरपूर्वक कहा।

राजा सतेन्द्र उसके पीछे चल पड़े।

शीघ्र ही वे जंगल के मध्य स्थित एक विशाल तालाब के पास पहुँचे। तालाब का स्वच्छ जल देखकर राजा की प्यास मानो और भी अधिक बढ़ चुकी थी।

–वाह पानी... वाह– राजा के होठों से खुशी के बोल फूट पड़े।

–अब आप जी भरकर पानी पी सकते हैं महाराज!– बहेलिए ने कहा।

तालाब के किनारे बैठ राजा ने दोनों हाथों में चुल्लु की भांति पानी भरकर पीने को अपने होठों से लगाया। लेकिन यह क्या उनके हाथों में पानी नहीं खून था। चौंककर उन्होंने फिर तालाब की ओर देखा। चारों ओर स्वच्छ निर्मल जल था। उन्होंने

देखा बहेलिया भी चुल्लु से पानी लेकर पानी पी रहा था। उन्होंने हाथों में भरा हुआ पानी खून समझकर फेंक दिया। पुनः ज्योंही उन्होंने तालाब का निर्मल स्वच्छ जल हाथों में भरा तो फिर रक्त नजर आने लगा था।

–हे ईश्वर ये कैसा जादू है, प्यास के मारे तो मेरी जान ही निकली जा रही है।– राजा बुदबुदा उठे।

–ठहरिये राजन्! मैं आपको जल पिलाता हूँ।– राजा के पीछे से आवाज आई।

उन्होंने पलटकर देखा मंत्री तेजी से उनकी ओर ही चला आ रहा था।

–नागोत्रा ये कैसा जादुई तालाब है, यहाँ पानी नहीं रक्त है।

–राजन् अगर बुरा न मानें तो मेरे हाथों से पानी पी लीजिये।– कहते हुए मंत्री नागोत्रा ने अपने दोनों हाथों में तालाब का पानी राजा की ओर बढ़ाया।

राजा ने डरते–डरते पानी पीना शुरू किया लेकिन महान आश्चर्य नागोत्रा के हाथों में पानी रक्त नहीं बना।

–सचमुच आज तुमने मेरी जान बचाई है, नहीं तो प्यास के मारे आज मेरा दम ही निकल जाता।– राजा ने प्रसन्न स्वर में कहा और नागोत्रा की पीठ पर स्नेह से अपना हाथ रख दिया और वे लौटने लगे।

–नागोत्रा इस जादुई तालाब का रहस्य मेरी समझ में नहीं आया।– राजा ने उत्सुक स्वर में प्रश्न किया।

–राजन् अगर अभयदान हो तो मैं इसका रहस्य बताऊँ।– मंत्री ने गम्भीर स्वर में कहा।

–हाँ, हाँ निर्भयता से कहो जो तुम कहना चाहते हो।

–राजन् जब मैं आपके आदेश पर पानी की तलाश में निकला तभी एक वृक्ष पर बैठे कुछ बन्दरों को मैंने देखा और रूककर उनकी बातचीत सुनी। उनमें से एक बन्दरिया अपने बन्दर से कह रही थी।– सुनो जी, आज हमारे जंगल में एक निष्ठुर राजा आया है।

इस पर बन्दर ने कहा– अच्छा ... लेकिन मैंने तो सुना है वह बहुत दयालु और प्रजावत्सल राजा है।

–हूंह जो सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए निरीह निर्दोष पशु–पक्षियों का वध करे भला वह दयालु और प्रजावत्सल कैसे हुआ? मनुष्यों की तरह जंगल के पशु–पक्षी भी तो उनकी प्रजा है। फिर जंगल प्रजा को कष्ट क्यों पहुँचाता है भला? देखना ऐसा पापी प्यास से तड़प–तड़पकर मरेगा।– बंदरिया ने क्रोध भरे स्वर में जवाब दिया।

–और मैं इतना सुनकर आपके पास दौड़ा चला आया। –मंत्री ने पूरी बात कह सुनाई।

–ओह ये बात है सचमुच कितना पापी हूँ मैं ... नागोत्रा। आज से हमारा शिकार खेलना बन्द, अब हम कभी ऐसा पाप नहीं करेंगे। ❖

एक्वेरियम की लोकप्रिय मछली

चाकू मछली

—परशुराम शुक्ल

चाकू मछली ताजे पानी की एक विलक्षण मछली है। अंग्रेजी में इसे 'नाइफ फिश' कहते हैं। चाकू मछली की पूँछ चाकू की तरह होती है, अतः इसे यह नाम दिया गया है। चाकू मछली दक्षिणी तथा दक्षिणी–पूर्वी एशिया में और अफ्रीका में पायी जाती है। चाकू मछली धीमी गति से बहने वाली नदियों में तथा ऐसे स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती है, जहाँ जलीय पौधे हों और पानी का बहाव कम हो। चाकू मछली बड़ी शानदार तैराक होती है। यह पानी की धारा के विपरीत भी तैर सकती है। चाकू मछली पानी की धारा के विपरीत तैरते समय अपने शरीर को कड़ा बना लेती है। इससे इसे तैरने में सुविधा रहती है।

चाकू मछली की गणना एक्वेरियम की सर्वाधिक लोकप्रिय मछलियों में की जाती है। इसके नितम्ब का मीनपंख पतला होता है। इसी की सहायता से यह पानी में अपना शरीर लहराते हुए तैरती है। चाकू मछली एक्वेरियम में कम प्रकाश वाले छायादार स्थान पर रहती है और ऐसे स्थानों से बचती है, जहाँ तेज प्रकाश हो।

चाकू मछली की शारीरिक संरचना ताजे पानी की मछलियों से पूरी तरह भिन्न होती है। इसका शरीर पतला और चौड़ा होता है तथा यह अगल–बगल से बहुत अधिक चपटी होती है। चाकू मछली के शरीर के किनारे ब्लेड जैसे होते हैं। इसकी पूँछ लम्बी होती है और पूँछ का सिरा नुकीला होता है।

चाकू मछली एक छोटी मछली है। इसके शरीर की लम्बाई 15 सेंटीमीटर से लेकर 30 सेंटीमीटर तक होती है किन्तु कभी–कभी इससे कुछ अधिक लम्बी चाकू मछलियां भी देखने को मिल जाती हैं। चाकू मछली के शरीर के रंग अधिक आकर्षक नहीं होते। इसकी पीठ और शरीर के ऊपर का भाग हल्के कत्थई रंग का होता है तथा पेट और शरीर के नीचे का भाग इससे भी हल्के रंग का होता है। चाकू मछली के शरीर के सभी मीनपंख बहुत छोटे होते हैं किन्तु नितम्ब का मीनपंख काफी बड़ा और लम्बा होता है। यह शरीर के मध्य भाग से आरम्भ होता है और पूँछ के पास तक चला जाता है।

चाकू मछली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह नदियों और तालाबों के कम ऑक्सीजन वाले

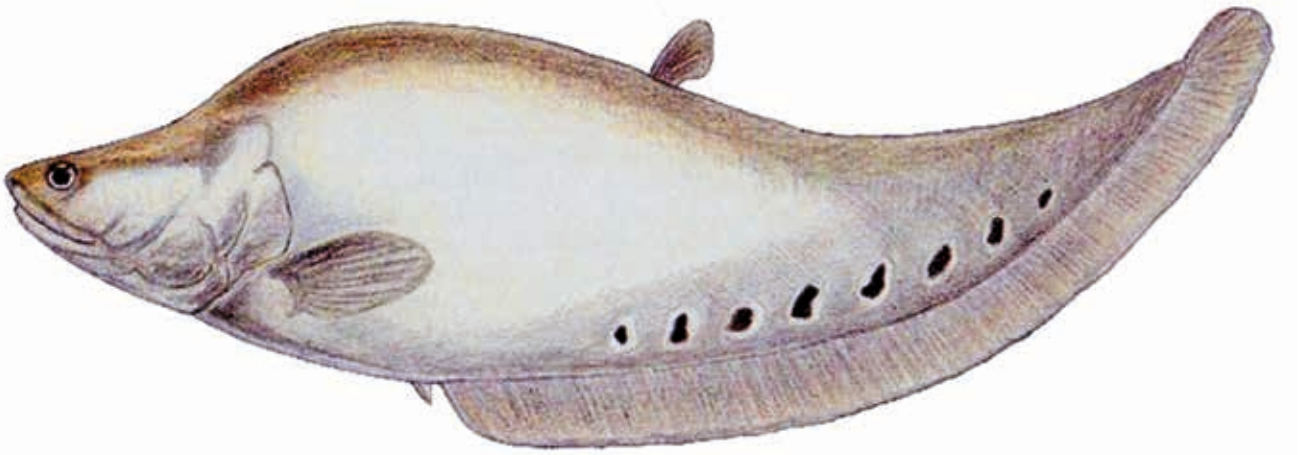

पानी में भी सरलता से रह सकती है। यह समय–समय पर पानी की सतह पर आती है और अपने गलफड़ों के पास के स्विम ब्लेडर में हवा भर लेती है। इसके बाद यह पानी के भीतर चली जाती है। चाकू मछली अपने गलफड़ों से भी सांस लेती है। इसके साथ ही यह अपने गलफड़ों के पास खाली स्थान में भरी हुई हवा का भी उपयोग करती है। इस प्रकार यह पानी के ऑक्सीजन की कमी को पूरा कर लेती है तथा कम ऑक्सीजन वाले पानी में भी सरलता से रह लेती है। चाकू मछली की दूसरी विशेषता यह है कि यह हवा से ऑक्सीजन लेने के बाद कार्बन–डाईऑक्साइड युक्त हवा अपने पेट, आँतों और मलद्वार से बाहर निकालती है। चाकू मछली शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंग पाचन तंत्र के अंग तथा पेट में पाये जाने वाले अन्य अंग इसके सिर के पीछे के एक छोटे से भाग में होते हैं।

चाकू मछली सर्वभक्षी मछली है। यह नदियों और तालाबों के ताजे पानी में पाये जाने वाले जीव–जन्तुओं से लेकर जलीय पौधे तक खाती है। चाकू मछली दिन के समय ताजे पानी के पौधों के मध्य छिपी रहती है और अंधेरा होने के कुछ समय पूर्व ही भोजन की तलाश में निकलती है। यह बड़ी पेटू होती है और शाम से लेकर अगले दिन प्रातःकाल होने तक भोजन करती है। चाकू मछली का प्रमुख भोजन पानी के पिस्सू की तरह के छोटी–छोटी मछलियों का भी शिकार करती है। प्राकृतिक अवस्था में चाकू मछली को जलीय पौधे खाते हुए देखा जा सकता है।

चाकू मछली एक्वेरियम में भी प्राकृतिक अवस्था के समान ही भोजन करती है। एक्वेरियम में इसे पानी के पिस्सू और कृमि जैसे अरीढ़कारी जीवों के मांस के छोटे–छोटे टुकड़े भी खाने के लिए दिये जाते हैं, जिन्हें यह बड़े स्वाद से खाती है। एक्वेरियम में रहने वाली चाकू मछलियों का सर्वोत्तम भोजन छोटे–छोटे जीव–जन्तु तथा मांस के टुकड़े माना जाता है। इससे इनका सर्वोत्तम विकास होता है तथा ये निरोग रहती हैं।

चाकू मछली के शरीर में अनेक विलक्षण क्षमताएं होती हैं। इसकी पूँछ यदि कट जाये अथवा इसके शरीर से अलग कर दी जाये तो यह पुनः निकल आती है। एक्वेरियम में चाकू मछलियों की लहराती हुई पूँछ प्रायः अन्य मछलियां काट लेती हैं। ऐसा होने पर तीन दिन के भीतर कटी हुई पूँछ के स्थान पर नयी पूँछ निकलना आरम्भ हो जाती है।

चाकू मछली को एक्वेरियम में रखना और पालतू बनाना बड़ा आसान है किन्तु इसे रखने के लिए बहुत बड़ा एक्वेरियम चाहिए। इसके साथ ही एक्वेरियम में बहुत जलीय पौधे भी होने चाहिएं जिनमें यह छिप सके और प्राकृतिक अवस्था का आनन्द ले सके। ❖

जहाँ वर्ष में दो बार रावण का दहन होता है

– कमल सोगानी

राजस्थान के हाड़ौती अंचल में दशहरा उत्सव की खुशियाँ अजीबोगरीब ढंग से मनाई जाती हैं। यहाँ के कस्बों में दशहरे से पूर्व रामलीला का मंचन किया जाता है। रामलीला में हर पात्र की भूमिका केवल पुरुष ही निभाते हैं। वे अपने चेहरों पर तरह–तरह के मुखौटे लगाकर रावण का खूब मजाक उड़ाते हैं।

हाड़ौती अंचल में वर्ष में दो बार रावण वध करने की परम्परा है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में कई स्थलों पर रावण के पुतले की जगह मिट्टी की विशाल देह वाली मूर्ति बनाई जाती है जिसे दशहरे के दिन खूब सुन्दर ढंग से सजाया जाता है। उसके मुँह व पेट के अन्दर लाल रंग से लबालब भरी मटकियाँ रखी जाती हैं। दशहरे के दिन राम की सेना तीर चलाकर रावण का वध करती है। वध के दौरान उसके धड़ व पेट से लहू जैसा लाल–लाल रंग टपकने लगता है।

हाड़ौती के कुछ हिस्सों में दशहरे के दिन घोड़े व शस्त्रों का पूजन किया जाता है ताकि आने वाले समय में कोई विपत्ति न आये। वहाँ के अंचलों में इस दिन घुड़दौड़ के अतिरिक्त ऊँट, बैल व गधों की दौड़ भी होती है। दौड़ में प्रथम आने वाले पशुओं के मालिक को 'रावण' खिताब से सम्मानित किया जाता है।

हाड़ौती अंचल में दशहरे की अनोखी विशेषता है। चैत (चैत्र) मास की नवरात्रि के समापन के दिनों यहाँ दशहरे जैसा माहौल बन जाता है। लोग रावण का वध करने के लिये अपने घरों से तलवारें लेकर आते हैं। फिर अपनी बड़ी–बड़ी मूँछों पर बट देकर रावण की प्रतिमा का वध करते हैं। वध की हुई रावण की मिट्टी के कुछ अंश को ग्रामीण अपने खेत में छिड़कते हैं उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से जंगली जानवर व चूहों से फसल को कोई हानि नहीं पहुँचती।

दशहरे के एक दिन पूर्व यहाँ के ग्रामों में ग्रामीण धार्मिक स्थलों पर जोखिम भरे करतब भी प्रस्तुत करते हैं।

हाड़ौती में दशहरे के दिन लाल मुँह के बन्दरों को भरपेट शुद्ध भोजन भी खिलाया जाता है। ग्रामीण लोग एक विशेष किस्म का ढोल लेकर जंगल में पहुँचते हैं। फिर ढोल को जोर–जोर से पीटकर एक निराली आवाज निकाली जाती है। जिससे मोहित होकर लाल मुँह के बन्दर एक–एक करके जमा होने लगते हैं। गाँव का सरपंच इन बन्दरों को पतलों में खाना परोसता है और बन्दर बड़े चाव से भोजन ग्रहण करते हैं। ग्रामीणों का मानना है कि रामभक्त हनुमान इस दिन बन्दर का भेष बनाकर भोजन ग्रहण करने आते हैं। ❖

तारे

– सुकीर्ति भटनागर

हर पल ही मुस्काते हैं,
वे नभ के टिम–टिम तारे।
जगमग–जगमग करते हैं,
कुदरत के वे हरकारे।।

इक दिन चन्दा ने पूछा,
कितने छोटे तुम सारे।
फिर भी सदा चमकते हो,
क्यों तम से न तुम हारे?

तब हँस बोले तारे सब,
मिलजुल रहते हम सारे।
छोटे–छोटे होकर भी,
फैला लेते उजियारे।।

बूँद ओस की

बूँद ओस की पात–पात पर,
कैसी ढुलमुल करती है।
फूल–फूल की पंखुड़ियों में,
मोती का दम भरती है।।

जल के छोटे–छोटे कण सी,
हरी घास पर बिखरी है।
बूँद ओस की सबको भाती,
पावन मन सी निखरी है।।

चंदा के साये में सोती,
सूरज से शर्माती है।
बूँद ओस की कोमल इतनी,
झटपट बिखर ये जाती है।।

क्षण पल के जीवन में अपने,
सबका मन बहलाती है।
खुशियां बाँटे हम औरों को,
यही हमें समझाती है।।

चौथे सेवक की बुद्धिमानी

कहानी : अशोक जैन

एक था राजा। उसने एक बार अपने चार सेवकों को घोड़ा खरीदने भेजा। उस जमाने में अरब के घोड़े काफी अच्छी नस्ल के समझे जाते थे। चारों सेवक बियाबान जंगल और कठिन रास्तों को पार कर अरब गये और उन्होंने वहाँ से एक अच्छा–सा घोड़ा खरीद लिया। जब वे वापस घर लौट रहे थे, तो जिस–जिस शहर से गुजरे लोगों ने घोड़े को बहुत पसन्द किया। कुछ लोगों ने तो घोड़े की इतनी कीमत देनी चाही, जो उसकी खरीद से कई गुना अधिक थी।

कुछ समय तक तो वे घोड़े को खरीदने वाले लोगों को टालते रहे, मगर जब उनके पास रुपयों की कमी होने लगी और घोड़े की कीमत बढ़ती गयी तो चारों ने आपस में सलाह–मशविरा कर घोड़े को अंततः अच्छे दामों पर बेच ही दिया। जब वे खाली हाथ राजा के पास गये तो उन्होंने राजा के दण्ड से बचने के लिए जो योजना बनायी थी, उस पर अमल किया। यानी राजधानी में दाखिल होते ही उन्होंने रोना–पीटना आरम्भ कर दिया।

राजा ने पूछा– आखिर माजरा क्या है? तुम रो क्यों रहे हो, घोड़ा कहाँ है?

चारों ने बताया– महाराज! जब हम घोड़े को लेकर आ रहे थे तो बियाबान जंगल में हमें डाकू मिल गये। उन्होंने हमें पेड़ों से बाँध दिया और घोड़ा लेकर चलते बने। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर हम लोग वापस लौटे हैं।

राजा ने इन चारों की बात पर यकीन तो नहीं किया परन्तु उसने कहा– अच्छी बात है अभी तो आराम करो कल बात करेंगे।

अगले दिन सेवकों की सच्चाई परखने के लिए राजा ने सबसे पहले एक सेवक को बुलवाया और बड़े प्यार से उससे पूछा– चलो भाई, घोड़ा गया सो गया। अब यह बताओ कि वह था कैसा और किस रंग का था?

कुछ देर तो वह सकपकाया और फिर जान बचाने की खातिर बोला– महाराज! घोड़ा बहुत गठीले बदन का था, उसकी दुलकी चाल थी, बड़ी सुन्दर अयाल थी।

राजा बोला– सो तो थी, मगर उसका रंग कैसा था?

सेवक बोला– महाराज, उसका रंग सफेद था।

राजा ने कहा– अच्छा, अब तुम यहीं बैठो।

इसके बाद राजा ने दूसरे सेवक को बुलवाया और उससे भी यही सवाल किया। उस सेवक ने बताया– महाराज, घोड़े का रंग मुश्की था।

राजा के हुक्म से तीसरे सेवक को हाजिर किया गया। उसने घोड़े का रंग भूरा बताया।

सबसे आखिर में चौथे व खास सेवक को बुलवाया गया। उसने आते ही शेष तीनों सेवकों के चेहरों पर नजर डाली और उनके बदहवास चेहरों पर उड़ती हवाइयाँ देखकर वह भाप गया कि दाल में जरूर कुछ काला है। खैर! उस चौथे सेवक के सामने भी वही प्रश्न दोहराया गया कि उस घोड़े का रंग कौन–सा था?

प्रश्न सुनते ही चौथा सेवक एकदम समझ गया कि यही सवाल पहले उसके तीनो साथियों से भी पूछा गया होगा और कोई जरूरी नहीं कि तीनों ने ही घोड़े का एक रंग ही बताया हो। चौथा सेवक अपने स्वर में गहरी उदासी घोलते हुए बोला– क्या अर्ज करूँ हुजूर? वह तो बड़ा बेमिसाल घोड़ा था, उसकी एक अद्‌भुत खासियत की खातिर ही तो हमने उसकी इतनी कीमत अदा की थी। हुजूर मुझे दुःख केवल इसी बात का है कि वह नायाब चीज आपको दिखाये बगैर उन बेरहमी डाकुओं ने लूट ली।

राजा की जिज्ञासा बढ़ी आखिर ऐसी क्या बात थी उस घोड़े में?

अब चौथा सेवक घोड़े की विशेषताओं का बयान करते हुए बोला– हुजूर, वह अद्‌भुत घोड़ा पल–पल में रंग बदलता था, कभी वह दूध की तरह सफेद हो जाता तो कुछ देर में वह मुश्की रंग का हो जाता और देखते ही देखते भूरा हो जाता।

हालांकि राजा अपने सेवकों के झूठ बोलने व मक्कारी पर नाराज तो बहुत था, लेकिन वह मन ही मन चौथे सेवक की चुतराई और बुद्धिमानी पर मुग्ध हो उठा। उसने अपने सेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा– तुम लोगों ने झूठ बोलकर बहुत ही निन्दनीय कार्य किया है और उसका दण्ड तुम्हें मिलना चाहिए, किन्तु मैं मुख्य सेवक की बुद्धिमानी से प्रभावित हूँ और इसी कारण आज तुम्हें क्षमा करता हूँ।

–मुश्किल समय में भी जो अपनी बुद्धि को जाग्रत और चेतन रखता है वह सभी बाधाओं से पार हो जाता है। ❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

बच्चों! पैराशूट एक वैज्ञानिक उपकरण है जिसका आविष्कार ए.जे. गार्नेरिन ने किया था।
जी, टीचर जी।
टीचर जी, पैराशूट किस काम आता है? ये तो किसी को गुब्बारे की तरह तोहफे में भी नहीं दे सकते। इसे खोलेंगे तो वो साथ में उड़ाकर ले जायेगा।
पैराशूट आपातकाल में उड़ते हुए वायुयानों से सुरक्षापूर्वक धरती पर उतरने के काम आता है।
युद्ध के समय इससे सैनिक युद्ध के मोर्चे पर भी उतर सकते हैं।
टीचर जी, पैराशूट की छतरी किसकी बनी होती है?
पैराशूट की छतरी रेशम या नॉयलोन की बनी होती है क्योंकि ये मजबूत एवं हल्का होने के कारण पैराशूट को सफलतापूर्वक उड़ने में मदद करते हैं।

टीचर जी, क्या पैराशूट गोलाकार ही होते हैं?
नहीं किट्टी! ये आयताकार और अण्डाकार भी होते हैं। साथ ही रंग–बिरंगे भी होते हैं।
बच्चों, पैराशूट से उड़ने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?
टीचर जी नहीं पता! कृपया आप ही बताओ।
पैराशूट से उड़ने वाले को स्काइडाइवर कहते हैं।
जी, टीचर जी।

बच्चों, आज के समय में पैराशूटिंग एक ऐसा खेल बन गया है जिसमें स्काइडाइवर आकाश में बहुत ऊँचाई तक जाकर धरती की तरफ छलांग मारते हैं।
टीचर जी, क्या उनको डर नहीं लगता?
डर कैसा? वे पूर्ण प्रशिक्षण लेने के बाद ही ऐसा करते हैं।
टीचर जी, आपने पैराशूट के बारे में बताया। धन्यवाद!

कभी न भूलो

संकलनकर्ता : जगतार 'चमन'

❖ जीवन में सफलता उसी को मिलती है जो बाल्यावस्था में अच्छे नियमों का पालन करते हैं।

– महात्मा गाँधी

❖ यदि प्राप्त करना चाहते हो तो पहले अर्पित करो।

– सुभाषचन्द्र बोस

❖ पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।

– रविन्द्रनाथ टैगोर

❖ प्रतिशोध दूरदर्शी नहीं होता।

– नेपोलियन

❖ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए।

– चाणक्य

❖ प्रेम की शक्ति घृणा की शक्ति की अपेक्षा अनन्त गुणी अधिक प्रभावशाली है।

– स्वामी विवेकानन्द

❖ कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

– अरविन्द घोष

❖ विद्वानों की संगति से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से विनय, विनय से प्रेम और लोग प्रेम से क्या नहीं प्राप्त कर सकते।

– साहित्य दर्पण

❖ दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान होता है। **– पं. जवाहर लाल नेहरु**

❖ संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जो नीति का जानकार नहीं है। किन्तु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते हैं।

– कल्हण

❖ दुनिया में सबकुछ दोबारा मिल सकता है पर माँ–बाप नहीं मिलते।

– सिसरो

❖ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा।

– स्वेट मार्डेन

❖ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।

– चिल्सन

❖ अपने आप को वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है।

– हार्ट स्वेन्शर

❖ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भण्डार है, पत्ते–पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।

– हरिऔध

❖ जो वाणी मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, मनुष्य के दिल में दूसरे के लिए प्यार, भाईचारा और नम्रता की भावनाएं उजागर करे, वही सही वाणी है।

– ऋग्वेद

– संकलनकर्ता : विभा वर्मा

ऐसा काम न करना

– राजकुमार जैन

हँसना और हँसाना अपना,
जीवन का आदर्श हो।
देश हित मर मिटें हम,
चाहे जितना संघर्ष हो।।

दीन–दुखियों की करें सेवा,
मानवता का कल्याण करें।
उच्च आदर्शों पर चलें सदा,
राष्ट्र का उत्थान करें।।

ऐसा काम कभी न करना,
अपना जिससे मान घटे।
महापुरुषों की वाणी से,
कभी न हमारा ध्यान हटे।।

बुरी आदतों को न अपनाएं,
सदा जगत में आदर पाएं।
बुजुर्गों की सेवा करके,
उनका स्नेह संबल पाएं।।

मैं बेईमान नहीं

– परिधि जैन

ईरान में एक गड़रिया था। उसका नाम रहीम था। वह बहुत ईमानदार था और मुसीबत में हर आदमी की मदद करता था। वह दिनभर अपनी भेड़ें चराया करता था लेकिन जब भी कोई उसे मदद के लिए बुलाता, वह पहुँच जाता। धीरे–धीरे उसकी ईमानदारी, नेकदिली पूरे क्षेत्र में फैल गई। इतनी प्रसिद्धि मिलने के बाद भी उसमें जरा–सा घमण्ड नहीं आया। वह यह कभी नहीं भूला कि वह एक मामूली गड़रिया है, जो भेड़ें चराकर अपनी जीविका चलाता है।

धीरे–धीरे उसकी ख्याति ईरान के सुलतान (बादशाह) तक पहुँची। उस समय बादशाह के कुछ मंत्री विद्रोह की तैयारी कर रहे थे, जिससे सुलतान को गद्दी का खतरा पैदा हो गया था।

सुलतान ने रहीम को अपने दरबार में बुलवाया। कुछ देर की बातचीत के बाद ही वह रहीम का प्रशंसक बन गया। उसने रहीम को उसी छोटे–से प्रांत का जागीरदार बना दिया, जहाँ का वह रहने वाला था।

रहीम बोला– हुजूर! मैं एक मामूली गड़रिया हूँ। मैं क्या जानूं कि शासन कैसे किया जाता है?

सुलतान ने कहा– तुममें ईमानदारी है, लगन है। यही तुम्हारा सबसे बड़ा गुण है। इसके सिवाय तुम हर आदमी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हो। एक अच्छे शासक में यही गुण होने चाहिए।

आखिरकार रहीम ने सुलतान की बात मान ली। लेकिन उसे इसकी खुशी नहीं हुई। सुलतान के मंत्रियों को यह बात खल गयी कि एक मामूली गड़रिया जागीरदार बन गया।

अपने ही इलाके के रहीम गड़रिये को अपना जागीरदार बना देखकर, वहाँ के लोग फूले नहीं समाये। लेकिन रहीम में जरा भी घमण्ड नहीं आया। वह हमेशा की तरह सादा खाना खाता, जिससे उसे याद रहे कि वह एक मामूली गड़रिया है। रहीम घोड़े पर सवार हो गाँव–गाँव जाता और लोगों की शिकायतें दूर करता। उसके पूरे इलाके में एक तरह से खुशहाली छा गई। सुलतान को भी यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि उसने एक अच्छे आदमी का चुनाव किया है।

लेकिन कुछ दिनों के बाद ही लोगों के मन में एक बात खटकने लगी कि रहीम जब सरकारी दौरे पर जाता, तो उसके पीछे एक टट्टू भी जाता था, जिस पर एक छोटा–सा बक्सा लदा होता था और रहीम उसका ध्यान जरूरत से ज्यादा रखता। कुछ लोगों ने यह कहना शुरू किया कि रहीम ने उसमें सोना–चाँदी और हीरे–जवाहरात बटोर रखे हैं। यह अफवाह इतनी तेजी से फैली कि गाँववाले भी यह विश्वास करने लगे कि रहीम उन्हें लूटकर अपने को धनी बना रहा है। अब लोगों का विश्वास उस पर से उठने लगा।

जब सुलतान ने यह बात सुनी तो उसे बहुत दुख हुआ, लेकिन उसने लोगों की कही बातों का विश्वास करने के बजाय खुद उसका पता लगाना उचित समझा। एक दिन सुलतान उस जगह पहुँचा, जहाँ रहीम अपना तंबू लगाये हुए था। सुलतान के आने की खबर सुनकर रहीम उनकी अगवानी के लिए बाहर निकला। उसके साथ ही एक नौकर टट्टू को लिये हुए आया, जिस पर एक बक्सा रखा हुआ था। रहीम ने झुककर सुलतान का अभिवादन किया, लेकिन सुलतान की नजर टट्टू पर टिकी हुई थी। रहीम समझ नहीं पाया कि आखिर बात क्या है?

सुलतान ने क्रोध में कहा– मैंने तुम्हें गरीबों की सेवा के लिए जागीरदार बनाया था, उन्हें लूटकर अपना घर भरने के लिए नहीं। अब तुम इस पद के लायक नहीं रहे क्योंकि तुमने गरीबों का खून चूसा है। इस बक्से को खोलकर दिखाओ कि तुमने कितना धन लूटकर बटोर लिया है?

रहीम ने चुपचाप बक्से को खोल दिया। सुलतान को यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि उसमें से एक पुरानी कमीज निकली।

रहीम ने कहा– हुजूर! यही मेरा खजाना है। इसे आप चाहे सोना–चाँदी कह लें या हीरे – जवाहरात। मैं इसे हमेशा अपने साथ इसलिए रखता हूँ ताकि यह न भूल जाऊँ कि मैं एक मामूली गड़रिया हूँ।

सुलतान की आँखें भर आईं। उसने रहीम को गले से लगाते हुए कहा– मुझे माफ करना। मैंने तुम पर खामखाह शक किया। तुम हमारे राज्य के सबसे ईमानदार आदमी हो।

उसके बाद सुलतान ने रहीम को और भी बड़ा जागीरदार बना दिया। लेकिन बड़े से बड़े पद पर पहुँचकर भी रहीम ने ईमानदारी नहीं छोड़ी। ❖

शुतुरमुर्ग

सबसे तेज धावक पक्षी

– विद्या प्रकाश

दुनिया में सबसे तेज दौड़ने वाला, सबसे बड़ा और सबसे भारी पक्षी यदि कोई है तो वह है शुतुरमुर्ग। इस पक्षी का एक अन्य नाम है ऑस्ट्रच, जो अफ्रीका के सवाना जंगलों और रेगिस्तान में बहुतायत से पाया जाता है। शुतुरमुर्ग आमतौर पर दस–बारह के समूह में रहना पसन्द करते हैं। शुतुरमुर्ग का जीवनकाल 30 से 40 वर्ष होता है। इसकी आँखें पृथ्वी पर मौजूद किसी भी जन्तु की आँखों से आकार में बड़ी होती हैं।

शुतुरमुर्ग विश्व में सबसे तेज दौड़ने वाला पक्षी है। यह हवा में नहीं उड़ सकता लेकिन अपनी छलांग में 10 से 16 फीट यानी 3 से 5 मीटर तक की दूरी आसानी से तय कर सकता है। शुतुरमुर्ग एक घंटे के अन्दर 43 मील यानी 70 किलोमीटर की दूरी तय कर लेता है और लगातार दौड़कर वह एक घंटे में 31 मील यानी 50 किलोमीटर की दूरी हवा में जम्प लगाये बगैर कवर कर सकता है। वह अपने पंखों का इस्तेमाल दौड़ते समय अपनी दिशा परिवर्तित करने के लिए करता है। उसके पैर बहुत ही मजबूत और लम्बे होते हैं। जिसका प्रयोग वह दौड़ने में तो करता ही है, आत्मरक्षार्थ भी करता है।

एक प्रकार से वह अपने लम्बे पैरों का इस्तेमाल हथियार के तौर पर भी करता है। वैसे वह सामान्यतः शान्तिप्रिय पक्षी है। यदि वह आत्मरक्षार्थ अपने पैरों से किसी व्यक्ति पर हमला कर दे तो इससे उसकी जान तक जा सकती है। शुतुरमुर्ग के अंडे आश्चर्यजनक रूप से मुर्गी के अंडे से कई गुना बड़े होते हैं। शुतुरमुर्ग का अण्डा आकार में इतना बड़ा होता है कि उसे पकड़ने के लिए व्यक्ति को अपने दोनों हाथों का इस्तेमाल करना पड़ता है। शुतुरमुर्ग का एक अंडा मुर्गी के दो दर्जन अंडों के बराबर होता है, जिसका वजन लगभग 3 पौंड होता है। इसके एक अंडे में लगभग 2000 कैलोरी की मात्रा होती है। प्रयोग में लाने के लिए इसके अंडे को कम से कम 40 मिनट तक पानी में उबालने की आवश्यकता पड़ती है। कालाहारी मरुस्थल (अफ्रीका) के निवासी शुतुरमुर्ग के अंडे के ऊपरी स्तर यानी छिलके का प्रयोग वाटर कन्टेनर के रूप में करते हैं।

शुतुरमुर्ग विश्व का सर्वाधिक भारी पक्षी है। सामान्यतः इसका वजन 100 से 160 किलोग्राम होता है। यह सर्वाहारी पक्षी है। यह खासतौर से पेड़–पौधों, कीट–पतंगों तथा छोटे जीव–जन्तुओं को ही खाता है।

मादा शुतुरमुर्ग रेत में बने छिद्रों में एक बार में 12 से 18 तक अंडे देती है। यह अंडे 15 से 20 सेंटीमीटर लम्बे तथा एक किलो 700 ग्राम तक वजनी होते हैं। इनका व्यास 10 से 15 सेंटीमीटर तक होता है। अंडों को सेने का काम दिन में मादा तथा रात में नर द्वारा किया जाता है। 42 से 45 दिन बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं। मादा शुतुरमुर्ग अपने डैनों से अपने बच्चों को ढककर उनकी रक्षा करती है। एक महीने में बच्चों का कद एक फुट बढ़ जाता है। मादा शुतुरमुर्ग अपने बच्चों की रक्षा के लिए हिंसक जंगली जानवरों से भिड़ जाने में भी नहीं हिचकिचाती।

इसका मुख्य आहार झाड़ियों के पत्ते, घास, बीज, फल आदि हैं। वैसे यह छोटी–छोटी चिड़ियों और कीट–पतंगों को भी खा लेता है। इसकी पाचन शक्ति इतनी अद्‌भुत है कि यह हरेक वस्तु को पचा सकता है। यह पत्थर तक खाकर हजम कर जाता है। चमकीली वस्तुएं इसे बेहद पसन्द हैं। सिक्के, हीरे, प्लग आदि यह आराम से खा जाता है। एक बार एक शुतुरमुर्ग के पेट से पचास से भी अधिक हीरे निकले थे।

क्रोध में आने पर शुतुरमुर्ग बहुत ही आक्रामक व घातक हो जाता है। आक्रमण के समय यह अपनी लम्बी टांगों तथा मजबूत चोंच का इस्तेमाल करता है। इसकी टांगों की मार से हिंसक पशु भी बचने का प्रयास करते हैं। क्रोध की अवस्था में इसकी चोंच के प्रहार की मारक क्षमता इतनी अधिक होती है कि वह लोहे के चद्‌दर तक में छेद कर सकता है।

इस पक्षी के पंख बहुत खूबसूरत होते हैं। दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, अल्जीरिया आदि देशों में कई 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' हैं, जहाँ इन्हें व्यावसायिक रूप से पाला जाता है। प्रत्येक आठ माह में एक बार इन पालतू शुतुरमुर्गों के पंख निकालकर उनका निर्यात कर विदेशी मुद्रा कमाई जाती है। इसके अतिरिक्त ये 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। यहाँ शुतुरमुर्ग पर बैठकर सवारी करने का मजा भी लिया जा सकता है।

शुतुरमुर्ग मानव–जाति के लिए पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में एक सहायक प्राणी है। यह इस धरती पर आदमी से बहुत पहले अस्तित्व में आया और स्वयं को वातावरण व परिस्थितियों के मुताबिक ढालकर आज भी अस्तित्व में है। शुतुरमुर्ग आदमी के लिए हर दृष्टि से उपयोगी पक्षी है। चोरी छुपे शुतुरमुर्ग का शिकार होने से इनकी संख्या में गिरावट आती जा रही है। पर्यावरण संरक्षण के लिए इनकी सुरक्षा किया जाना अनिवार्य है। ❖

पढ़ो और हँसो

टीचर : ऋतु, आज तुम स्कूल देर से क्यों आई हो?

ऋतु : मैडम, मैं घर से बीस रुपये का सिक्का लेकर चली थी, पर रास्ते में वह कहीं खो गया। मैं उसे ढूंढने में लग गई थी।

टीचर : और शिवांगी, तुम देर से क्यों आई हो?

शिवांगी : मैं, उस सिक्के को पैर के नीचे दबाकर खड़ी थी।

तीन चीटियां एक रास्ते पर बैठी बातें कर रही थीं कि इतने में वहाँ से एक हाथी गुजरा। तीनों चीटियों में से एक चींटी से रहा नहीं गया तो वह चीटी हाथी से बोली– ऐ लम्बी सूंड वाले हमसे कुश्ती करोगे?

यह देख बाकी दो चीटियां बोलीं– रहने दो यार! बेचारा अभी अकेला है और हम तीन।

अमित : यार सुमित पिछले हफ्ते पैदा हुआ तुम्हारा भाई इतना रोता क्यों है?

सुमित : अगर तुम्हारे एक भी दांत न हो, सिर गंजा हो, तुम्हारे पैर इतने छोटे कमजोर हो कि तुम खड़े भी न हो पाओ उस पर तुम कुछ भी न कह सकते हो मेरे ख्याल से तुम्हें भी उसकी तरह रोना आएगा।

सोनू : अरे पिंकी तू जो 'न्यूजपेपर' पढ़ रह रही है वह उल्टा है।

पिंकी : तो क्या हुआ? मैं पढ़ थोड़े ही रही हूँ मैं तो केवल फोटू देख रही हूँ।

पापा : बेटा, तुम तराजू और बाट अपने बैग में डालकर स्कूल क्यों ले जा रहे हो?

बेटा : पापा, मास्टर जी कहते हैं कि पहले हर बात तोलो फिर बोलो।

एक चिड़ियाघर में एक बच्चा हाथी के पास खड़ा था।

पापा : बेटे हाथी से दूर हो जाओ।

बेटा : पापा आप चिन्ता मत करो मैं हाथी का कुछ नहीं बिगाड़ूंगा।

एक बन्दर पेड़ पर चढ़ा तो ऊपर बैठे लंगूर ने कहा– तू क्यों चढ़ा?

बन्दर : सेब खाने के लिए चढ़ा।

लंगूर : पर यह तो आम का पेड़ है।

बन्दर : मुझे पता है। सेब तो मैं साथ लाया हूँ।

चीटी : (हाथी से) तुम मुझे अपनी शर्ट दे दो।

हाथी : क्यों?

चीटी : दरअसल आज मेरी बहन की शादी है। टैंट लगाना है।

मारपीट में पकड़े गये एक व्यक्ति को थानेदार ने डांटते हुए कहा– कसम खाओ कि आज के बाद तुम किसी के भी बाल नहीं छुओगे?

पकड़ा गया व्यक्ति बोला– यह कसम मैं नहीं खा सकता। इस कसम के अलावा कोई भी कसम खा सकता हूँ।

थानेदार : क्यों?

व्यक्ति : हुजूर, मेरा नाई का पेशा है।

विद्यार्थी : (टीचर से) सर! मुझे लिखना आ गया।

टीचर : बहुत अच्छा! कुछ लिखकर बताओ?
(विद्यार्थी ने कुछ लिखा)

टीचर : क्या लिखा है, पढ़कर सुना तो?

विद्यार्थी : सर! अभी तक तो मैं केवल लिखना ही सीखा हूँ, पढ़ना नहीं।

पापा : चिंटू, तुम्हें सिर्फ फूल तोड़ने के लिए कहा था। अब तुम साथ में डाली क्यों तोड़ लाए हो?

चिंटू : पापा, वहाँ लिखा था, फूल तोड़ना मना है इसलिए मैंने डाली तोड़ ली।

अध्यापक : मोटर साइकिल के कितने टायर होते हैं?

पप्पू : 6 टायर।

अध्यापक (गुस्से से) : कैसे?

पप्पू : 4 मोटर के, 2 साइकिल के।

बस स्टैण्ड पर एक व्यक्ति अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ बहुत देर से खड़ा था। काफी देर बाद एक आदमी उसके पास आया और बोला– क्यों भाई, जबसे तुम यहाँ आये हो, तब से न जाने कितनी बसें आयीं और चली गईं। पर तुम किसी भी बस में नहीं बैठे?

वह व्यक्ति बोला– क्या करूँ? भाई साहब! जो भी बस आती है। उस पर लिखा होता है। 'हम दो, हमारे दो' पर हम तो पाँच हैं।

ऑपरेशन सफल होने के बाद मरीज को डॉक्टर ने कहा– अब तुम खतरे से बाहर हो, फिर भी तुम इतने क्यों डर रहे हो?

मरीज बोला– दरअसल, डॉक्टर साहब, मैं जिस ट्रक से टकराया था, उस ट्रक के पीछे लिखा था– 'फिर मुलाकात होगी।'

मोनू : इस वाक्य को अंग्रेजी में बनाओ?– 'वसंत ने मुझे मुक्का मारा।'

गोलू : वसंतपंचमी।

मालिक : (नौकर से) रामू मैं नदी में डूब रहा हूँ।

रामू : मालिक अभी न डूबिए, आपने मेरा तीन महीने का वेतन देना है।

– नीरज राठौर (सोनीपत)

खूबसूरत घोसला

– कमल जैन

यूं तो चिड़ियों की दुनियाभर में 450 से भी अधिक प्रजातियां मौजूद हैं। कुछ चिड़ियाँ तो बड़ी ही सुन्दर होती हैं, कुछ बुद्धिमान भी होती हैं। लेकिन प्रकृति की गोद में एक चिड़िया ऐसी भी है जिसे 'प्रकृति का कुशल दर्जी' भी कहा जाता है। इस चिड़िया का नाम है– बया।

बया चिड़िया अपना घोसला बहुत खूबसूरत बनाती है। इसके निर्माण के लिए यह तिनके, पेड़ के सूखे पत्ते, सन, सूतली के धागे, तरह–तरह की जंगली घास, चिकने पौधों का चिपचिपा दूध, पानी और मिट्टी आदि को दिन–रात एक करके जुटाती है। इस एक घोंसले को यह 10–12 दिनों में पूरा बना लेती है। इस घोंसले की एक खासियत यह है कि यह आसपास से तो भरा–भरा होता है लेकिन अन्दर से बिल्कुल खाली। अन्दर–बाहर आने–जाने के लिए इसकी 'एन्ट्रेस' चिड़िया के आकार तक खुला होता है। इस घोंसले की खूबसूरत बनावट देखकर ऐसा लगता है कि इसे किसी कुशल कारीगर (दर्जी) ने बुना है। यही कारण है कि इसे कुदरत के 'टेलर बर्ड' के नाम से भी जाना जाता है।

इस चिड़िया का विभिन्न देशों की जलवायु के कारण रंगरूप भी भिन्न–भिन्न होता है। अफ्रीका और एशिया में इसका रंग हल्के भूरे रंग का होता है। पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी गर्दन लाल व चोंच नीली–काली होती है, आँखें मोती की तरह चमकती दिखाई देती हैं, परों पर छोटे या चितकबरे निशान होते हैं।

इस चिड़िया की एक अन्य विशेषता है कि यह केवल उन जगहों पर रहना पसंद करती है, जहाँ इसे अपना घोसला बनाने के लिए मनपसन्द पेड़ आसानी से मिल जाए। घोंसले का निर्माण नर–मादा दोनों ही मिलकर करते हैं। नर घास व तिनके ढूंढ–ढूंढकर लाता है तथा इन्हें एक जगह जमा करता है, फिर मादा भी अन्य चीजें ला–लाकर इसके संग–संग घोंसले का निर्माण शुरू कर देती है। दोनों का यह प्रयास एक शानदार घोंसले के रूप में दिखाई देने लगता है। यह नीड़ एक तरह से मजबूत भी होता है। हवा के तेज झोंके, तेज बरसात, ओले आदि का इस पर एकाएक असर नहीं होता। यह घोसला डेढ–दो वर्षों तक खराब नहीं होता। फिर इस पक्षी की नई पीढ़ी जवान होकर अपने लिए नये नीड़ का निर्माण करती है। ❖

चिड़िया

– कीर्ति श्रीवास्तव

चिड़िया चहक–चहक कर कहती,
सुबह–शाम मैं गगन में रहती।
कब तक मैं अब उड़ पाऊँगी,
प्रदूषित हवा नहीं सह पाऊँगी।।

दम घुटता है अब तो मेरा,
दे दो अब तो सुखद सबेरा।
तभी तुम्हारा आँगन चहकेगा,
चमन भी खुशबू से महकेगा।।

पेड़ खूब लगाना होगा,
चिड़ियों को बचाना होगा।
घोसला तभी बना पाऊँगी,
बच्चों को भी बचा पाऊँगी।।

नन्हीं चिड़िया

– राजेन्द्र निशेश

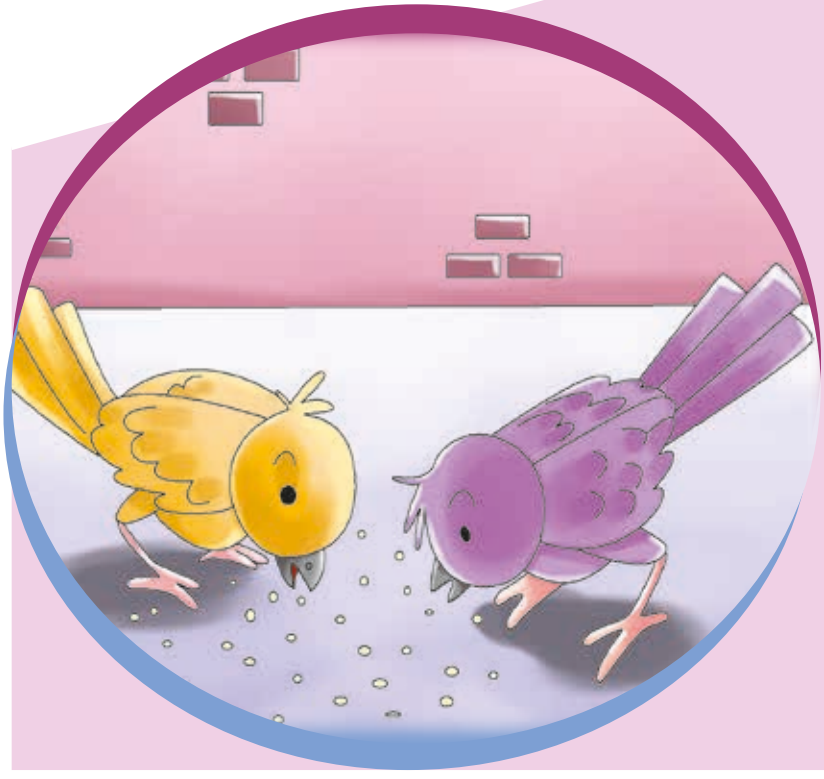

नन्ही सी इक चिड़िया,
आँगन में है आती।
देखाते ही बाजरा,
झटपट से खा जाती।।

बँधी रस्सी पर बैठ,
झूला कभी बनाती।
मस्ती छा जाने पर,
मीठे सुर में गाती।।

नन्ही सी इक चिड़िया,
आँगन में है आती।
मन में जब भी आता,
फुर्र से वह उड़ जाती।।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ, कविताएँ एवं लेख शिक्षाप्रद होते हैं। इस पत्रिका में जुलाई महीने में प्रकाशित कहानी 'देश का बेटा' एवं 'पढ़ो और हँसो' अच्छे लगे। सम्पूर्ण अवतार बाणी की व्याख्या जो दी गई है वह हमें सत्गुरु के वचनों पर चलने में मदद करती है।

– पूरनसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। 'सबसे पहले' हमेशा ही शिक्षाप्रद होते हैं। इसकी सम्पूर्ण सामग्री ही बहुत अच्छी होती है।

इसमें बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए सम्पूर्ण सामग्री है। शिक्षाप्रद स्तम्भ और ज्ञानवर्द्धक लेख बच्चों के ज्ञान में बढ़ोत्तरी करते हैं। कविताएँ एवं कहानियाँ बच्चों के लिए बहुत ही हितकारी एवं लाभकारी हैं।

– जयनारायण (दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ और मुझे इससे प्रेरणा मिलती है कि बच्चों को कैसे अच्छी शिक्षा दी जा सकती है क्योंकि इस पुस्तक में जहाँ ज्ञान की बातें हैं वहाँ दिनचर्या तथा प्रसन्न रहने के साधन हैं। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि इस कार्य में हमारी सहायता करे तथा बच्चों में सद्बुद्धि और अच्छे संस्कार पैदा करे ताकि आने वाले समय में बच्चे अच्छे तथा उत्तम विचार वाले हों।

– मनोहरलाल भठेजा

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे और मेरे परिवार को पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। इसमें बहुत सी ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक बातें होती हैं। हमें मनोरंजन के साथ प्रेम, शान्ति और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना तथा हमेशा सत्य बोलना सिखाती है।

– संतोष कुमार शाह (सिधी)

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कविताएँ तथा कहानियाँ बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को हँसती दुनिया बहुत पसन्द है।

जब हँसती दुनिया घर में आती है तो हम बहन–भाइयों में पहले पढ़ने के लिए होड़ लग जाती है। बच्चो के लिए हँसती दुनिया एक अच्छी पत्रिका है।

– ज्योति शर्मा (चार.के.एस.पी.)

मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं बड़े चाव से हँसती दुनिया पढ़ता हूँ। मैं हँसती दुनिया का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। अपने सहपाठियों व मित्रों को भी पढ़ाता हूँ। इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

– शुभम सक्सेना (इटावा)

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **अक्षरा सिंह** — **10 वर्ष**
   6, पुराना कटरा रोड,
   प्रयागराज (उ.प्र.)

2. **सान्वी खुराना** — **9 वर्ष**
   2–ए–35, जवाहर नगर,
   श्रीगंगानगर (राज.)

3. **अनुष्का राज** — **11 वर्ष**
   वार्ड नं. 19, गाँधी नगर रमना,
   मोतीहारी (बिहार)

4. **खुशी कुमारी** — **10 वर्ष**
   ढेकहा महुआ टोला,
   पोस्ट : ढेकहा बाजार, मोतीहारी (बिहार)

5. **रिद्धि सैनी** — **8 वर्ष**
   आर जेड जी–846–ए, राजनगर पार्ट–2,
   पालम कालोनी, नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

हर्षिता (हनुमान बाग कालोनी, नागौर), सत्यम कुमार (सोन्धानी, सिवान), आराधना मखीजा (गाँधी नगर, कानपुर), नक्ष सेठी (मलोट, श्रीमुक्तसर साहिब), अनमोल (मंडी डबवाली, सिरसा), आलिया (उरैन, लखीसराय), पान्या (आवास विकास कॉलोनी, अलीगढ़), ममता, दीप्ति, विशाल, पीहू, रवि, रितु पूजा, मुक्ता, अनमोल, श्रेया, कार्तिक, (चमन विहार, गाजियाबाद) खुशी, रिया, कृतिका गुप्ता, प्रीति, मानवी राज, आशीष कुमार (मोतिहारी), रेशमा रामचंदानी, मुस्कान लालवानी, प्रियंका, प्राची विशाखा राजाई, मंथन, सुमित, मुस्कान रूपानी नंदनी, कृष्णा, ओम, लहर, नैतिक, चांदनी, लव मूलचंदानी, शिव, अनंत बम्बाणी, निश्किा, रोशनी, जय, कार्तिक मनवाणी, डिम्पल, आर्या हेमराजानी (गोधरा)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 अक्टूबर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

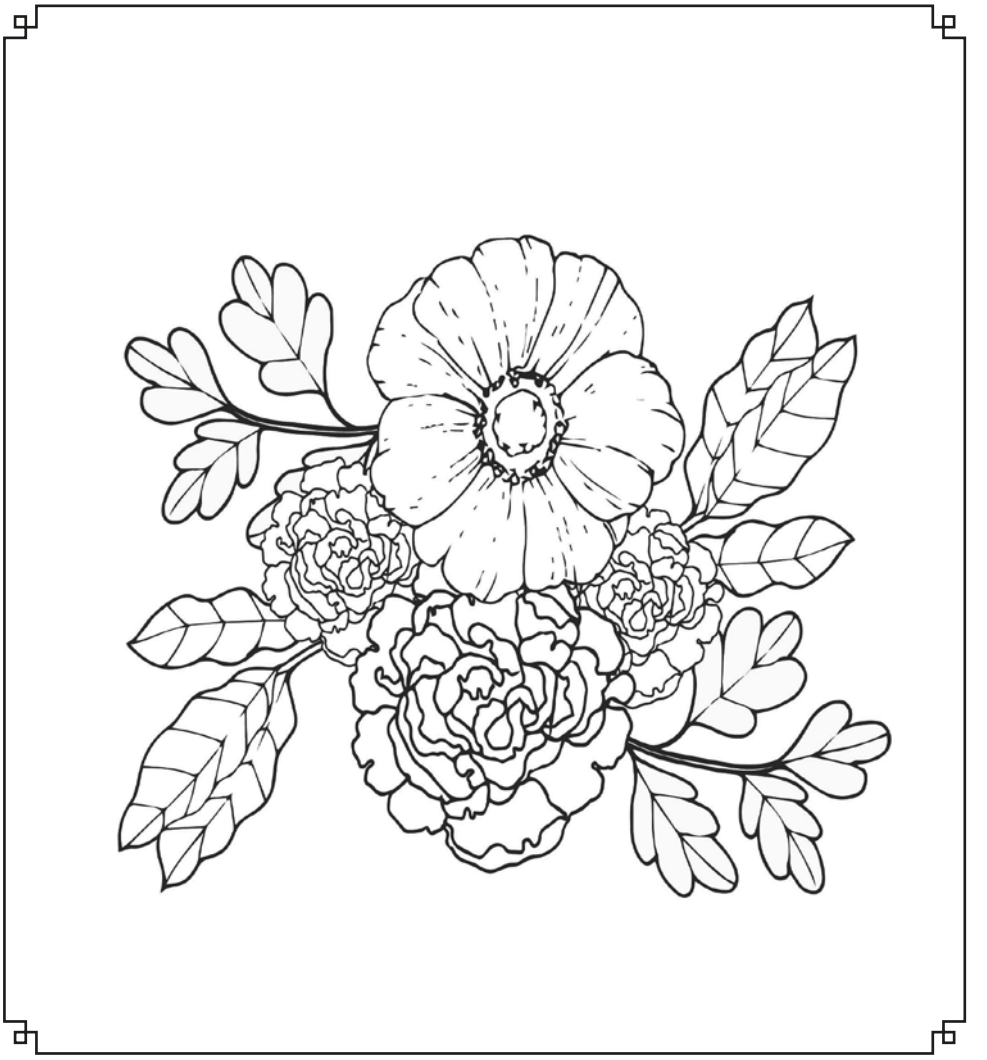

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio

radio.nirankari.org

24x7

Kids Divine

ek ruhani muskaan

kids.nirankari.org

Catch the latest episode on 23rd of every month

IT'S LIVE, DOWNLOAD NOW

NEWS DIVINE

www.nirankari.org

Catch the latest episode on 10th of every month

सुनो तराने नए पुराने

Nirankari Radio

Bhakti Sangeet

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 20th of every month

महफ़िल ए रूहानियत

Mehfil-E-Ruhaniyat

Special programme

Voice DIVINE

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on 1st & 16th of every month

SV

SOUL VIBES

radio.nirankari.org

Catch the latest episode on Last Friday of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**